बापा रावल



डॉ. मोहब्बत सिंह राठौड़





सम्पादकीय

विश्व में शान्ति एवं सुव्यवस्था की स्थापना में मानवीय कार्यों की अहम भूमिका रहती है। मानव पर विकृत विचारों का प्रभाव कार्य रूप में समाज में अशान्ति लाता है और सुविचारों का प्रभाव समाज, देश व विश्व में शान्ति व सुव्यवस्था को बढ़ावा देता है। अच्छे व बुरे कार्यों का विश्लेषण व्याख्या अतीत के ज्ञान से होती है। अतीत के अच्छे मानवीय कार्य व बुरे कार्यों की जानकारी भविष्य के मार्गदर्शन के लिए परम आवश्यक है। इसीलिये भारतीय धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक परम्पराओं में मानव में अच्छे विचारों को दृढ़ता देने का आह्वान है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत की खोज व उनसे भारतीय इतिहास को प्रभावित करने वाले व्यक्ति के कृतित्व को उजागर करने के प्रयास में विद्या प्रचारिणी सभा, भूपाल नोबल्स संस्थान, उदयपुर के उच्च प्रबन्धन ने मानवीय मूल्यों के उच्च आदर्श तथा देश व विश्व में शान्ति सुव्यवस्था के प्रेरक पुरुष बापा पर शोधपरक कार्य करने की प्रेरणा से बापा पर प्रेरणादायक प्रसंगों को उजागर करने का प्रयास किया गया। विभिन्न प्राप्त स्रोतों के अध्ययन व विश्लेषण से तत्कालीन भारतीय राजनैतिक स्थिति को उजागर किया है। बापा के अभावग्रस्त बाल्यकाल में अच्छे मार्गदर्शक के रूप में हारीत राशि का मिलना और हारीत बापा की दृढ़ता ने तत्कालीन भारतीय राजनैतिक उथल-पुथल को समझ भारतीय शासकों को एक कर विदेशी आक्रमणकारियों को भारतीय सीमा से दूर रखा।

भारतीय संस्कृति की मानवीय विशेषताओं ने समाज में शान्ति व्यवस्था की एक ऐसी परम्परा रखी जो अनेक शताब्दियों तक भारत ही नहीं विश्वजन में प्रेरणा के

रूप में जीवन्त बनी रही। बापा द्वारा स्थापित मेवाड़ राज्य व उसके शासक ईश्वरीय शक्ति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर शासक के रूप में ईश्वरीय शक्ति के मंत्री (दीवाण) के रूप में कार्य सम्पादन की अनूठी परम्परा कायम की जिससे इनके वंशजों में उच्च आदर्श व जन सेवा के भावों को बनाये रखने में सहायक बनी। परिणामस्वरूप बापा की वंश परम्परा में रावल खुमाण, महाराणा हमीर, महाराणा कुम्भा, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप व महाराणा राजसिंह जैसे कई शासकों ने समाज को नई दिशा व व्यवस्था प्रदान की। बापा के वंशज व उनका राज्य साम्राज्य विस्तार व वैभव से ज्ञात न होकर वह अपने उच्च आदर्शों से पहचाना जाता है। अत: बापा के व्यक्तित्व व कृतित्व को उजागर कर उसके ऐतिहासिक पक्ष के साथ-साथ उसके द्वारा स्थापित व्यवस्था को भी उजागर करने का प्रयास किया गया है। जो भावी पीढ़ी में मानवीय मूल्यों की स्थापना में सहायक होगा।

बापा पर कार्य करने के प्रेरणा प्रदाता मेरे गुरु प्रो. के. एस. गुप्ता ने बापा पर लेखन का शोध मार्गदर्शक के रूप में सतत प्रेरणा प्रदान की। तदर्थ आभारी। विद्या प्रचारिणी सभा, भूपाल नोबल्स संस्थान के कार्यवाहक अध्यक्ष श्रीमान् यशवन्त सिंह शक्तावत, उपाध्यक्ष श्रीमान् तेज सिंह बान्सी, मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह राठौड़, संयुक्त मंत्री श्रीमान् पदम सिंह चूण्डावत, प्रबन्ध निदेशक डॉ. निरंजननारायण सिंह राठौड़, वित्तमंत्री श्रीमान् कृष्ण सिंह सारंगदेवोत व प्रतिष्ठान परामर्श समिति अध्यक्ष श्रीमान् बलवन्त सिंह झाला का आभार कि आपके द्वारा उक्त कार्य की स्वीकृति और मार्गदर्शन से ही इसका प्रकाशन हो सका। कार्य सम्पादन में पूर्ण सावधानी रखी गई है, फिर भी त्रुटि रहना सम्भावित है, जिसके लिए क्षमाप्रार्थी हैं। आशा है यह कार्य शोधार्थियों, इतिहास पाठकों एवं भावी पीढ़ी को प्रेरणा प्रदान करेगा। इसके लेखन में जिन ग्रन्थों की सहायता ली उनके प्रति हम कृतार्थ हैं।

उदयपुर
18 जून, 2015
हल्दीघाटी युद्ध ' दिवस

डॉ. मोहब्बत सिंह राठौड़
निदेशक
प्रताप शोध प्रतिष्ठान
उदयपुर

अनुक्रमणिका

बापा कालीन भारत

बापा रावल के व्यक्तित्व व कृतित्व को उजागर करने से पूर्व उस समय की भारतीय राजनैतिक स्थिति की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक होगा। बापा के समय पश्चिमी भारतीय सीमा पर राजनैतिक अस्थिरता ने बाहरी आक्रमणकारियों को भारत पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। महान गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद छठी सदी के प्रारम्भ में मौखरी वंश का उदय और इस वंश के शासकों ने भारत पर हूणों के आक्रमणों को रोकने में संघर्ष किया।

प्रभाकरवर्द्धन ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अपना राज्य स्थापित कर अपने पुत्र राज्यवर्द्धन व हर्षवर्द्धन को उत्तरापथ विजय अभियान में भेजा। इसी समय प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु हो जाती है और उसकी पुत्री के राज्य कन्नौज पर मालवा का आक्रमण होता है तथा उसके दामाद को बन्दी बना लिया जाता है। राज्यवर्द्धन ने मालवा पर आक्रमण कर उसे परास्त किया। इसके बाद वह पूर्व की ओर बढ़ा, वहाँ गौड़ प्रदेश में शशांक के हाथों छल से वह मारा जाता है। इसके बाद हर्षवर्द्धन शासक के रूप में स्थापित होता है। हर्षवर्द्धन ने आसाम, गौड़ प्रदेश, सिन्ध, गुजरात व उड़ीसा आदि उत्तर भारत के प्रदेशों पर अपना अधिकार कर शान्ति व्यवस्था कायम की। हर्षवर्द्धन ने कंधार काबुल तक के क्षेत्र को अपने साम्राज्य में मिलाया।

छठी सदी में गुर्जर जाति की शक्ति का विस्तार हुआ। इन्होंने पंजाब, गुजरवाला, भिन्नमाल (राजस्थान), भरूच (गुजरात) पर अपना राज्य कायम किया। नर्मदा के दक्षिण में पुलकेशी, चालुक्य और पल्लव राज्यों का शासन था। यों नेपाल में लिच्छवियों व ठाकुरी वंश का राज्य था। उत्तरी पश्चिमी भारत में हूणों को कन्नौज व थानेश्वर के शासकों ने हराया। काबुल कंधार में एक क्षत्रिय शासक का राज्य था। कश्मीर में ककोर्ट वंश का राज्य था।

मध्य एशिया में भी राजनैतिक अस्थिरता थी इसका वर्णन चीनी यात्री युआन

च्वांग के यात्रा संस्मरणों में मिलता है। 630 ई. में अफगानिस्तान के राजा, विजय संग्राम ने तत्कालीन तुर्कों के प्रभाव को रोका। कश्मीर व चीन में भी तुर्कों को परास्त किया। तिब्बत खोड़चन गेम्बो के नेतृत्व में स्वतन्त्र राज्य था।

हर्षवर्द्धन के नेतृत्व में उत्तरी भारत में शक्तिशाली राज्य था, लेकिन 647 ई. में इसकी मृत्यु के बाद सम्पूर्ण भारत कई छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। इनमें आपसी कलह से भारतीय स्तर पर अशान्ति बन गयी थी। सातवीं सदी के मध्य में चित्तौड़ पर चित्रांगद मोरी नामक शासक का राज्य था। इसके सन्दर्भ में माना जाता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के समय से ही चित्तौड़ पर मौर्यों का शासन था, लेकिन ऐतिहासिक प्रमाणों के अभाव से प्रमाण के रूप में एक मात्र प्रमाण मान मौर्य का तालाब ही इनका अधिकार प्रमाणित करता है।

भारत में हर्षवर्द्धन और पुलकेशी राज्य अपनी ऊँचाईयों पर थे तब अरब देशों में महात्मा मुहम्मद के भक्तों की नई सोच व विचारधारा ने वहाँ के जनमानस में विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा तथा विभिन्न कबिलों के आपसी संघर्ष करने वाले लोगों को एक ईश्वर व न जात न पांत व न ऊँच न नीच की बात पर उन्हें संगठित किया जा रहा था। वहाँ के लोगों में मुहम्मद साहब के प्रति श्रद्धा बनने लगी। जनता उन्हें पैगम्बर या देवदूत के रूप में मानने लगी। यों 571 से 632 ई. के मध्य मुहम्मद साहब ने अपने विचारों से अरब देशों में संगठित प्रयास से विश्व जन में अपने मत का शक्ति से प्रचार प्रारम्भ किया।

मुहम्मद साहब की मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों खलीफाओं ने उनकी विचारधारा का प्रचार किया। इनमें मुख्यत: अबुबकर (632-634 ई.), उमर (634-643 ई.); उस्मान (643-655 ई.); अली (655-669 ई.) ने कुछ ही समय में उत्तरी अफ्रीका को इस्लाममय बना दिया। इन खलिफाओं के साम्राज्य का केन्द्र भी आवश्यकतानुसार बदलकर अरब से दामिश्क (सीरिया) में 670 ई. में और यहाँ से 766 ई. में बगदाद बना दिया।

इन खलिफाओं के प्रभाव से पश्चिमी भारतीय सीमा पर ईरान के पारसी लोगों को दबाव से ईस्लाम के अनुयायी बनाये जाने पर उनमें से कुछ भारत की ओर बचकर आये। इसके बाद खेबर व बोलन दर्रों पर स्थित क्षत्रिय राज्यों पर आक्रमण प्रारम्भ हुए, लेकिन उन्होंने अरब, आक्रमणकारियों से कड़ा संघर्ष कर उन्हें रोके

रखा। इस प्रकार इन सीमावर्ती प्रदेशों पर 711-12 ई. से पूर्व कोई 15 छोटे-बड़े आक्रमणों को विफल किया गया।

सिन्ध अहोर के शासक चचदेव का बड़ा पुत्र दाहिर सेन, छोटा पुत्र दरशिया व पत्नी रानी सुहांदी थी। 711-12 ई. में दाहिर सेन अहोर का शासक था। दाहिर सेन का बौद्धों, जाटों व मद जाति के लोगों ने विरोध किया था। ऐसे में 711 ई. में अरबों ने देवल बन्दरगाह पर आक्रमण किया। देवल के एक मन्दिर के पुजारी की मदद से अरबों ने देवल पर अधिकार कर लिया। इसके बाद ब्राह्मणवाद पर अधिकार किया। दाहिर सेन की पत्नियों के नेतृत्व में जौहर किया गया, और उसका पुत्र जयसिंह बचकर कश्मीर व कन्नौज के शासकों के पास मदद हेतु गया लेकिन उसे कहीं से भी सहायता प्राप्त न हो सकी। इस प्रकार भारतीय शासकों की उपेक्षा व संगठित प्रयासों के अभाव में पश्चिमी भारतीय सीमा में अरबों का विस्तार प्रारम्भ होता है।

ऐसी परिस्थितियों में हारीत राशि ने ऐसे प्रेरणा पुरुष बापा को प्रेरित कर नागभट्ट के साथ मिलकर भारतीय जन में ऐसी प्रेरणा दी की बापा के नेतृत्व में सम्पूर्ण भारत के शासकों ने अरब आक्रमणों के विरोध में सफल योजना को कार्यरूप दिया जो इस्लाम के प्रचार को रोकने में सफल साबित हुई। अत: बापा के जीवन वृत से सम्बन्धित पक्ष को उजागर करने का प्रयास किया जा रहा है-

प्राग्वाट, शिविजनपद, मेदपाट, मेवाड़ नामों से पहिचाने जाने वाले भू-भाग का ऐतिहासिक महत्त्व उत्कृष्ट है। इसीलिये विद्वानों ने मेवाड़ को आदर व श्रद्धा प्रदान की है। मेवाड़ के शासकों को श्रेष्ठ स्थान प्रदान कर उनमें पूज्य भाव से प्रेरणा लेते आये हैं। विगत अनेक शताब्दियों में संसार के कई प्राचीन राज्य बनते-बिगड़ते रहे हैं। भारत में भी विदेशी आक्रमणों व आन्तरिक उथल-पुथल में अनेक राजवंश अपनी पहचान बचा नहीं पाये। मेवाड़ विश्व में एकमात्र राज्य व यहाँ के राजवंश के रूप में गुहिल सिसोदिया राजवंश की मानवीय मूल्यों की अनुपम विशेषताओं ने इसे 14 वर्षों तक अविरल शृंखला को बनाये रखने का सम्मान प्राप्त हुआ। प्रकृति ने भी प्राकृतिक सुरक्षा से सुरक्षित किया। वहीं यहाँ के शासक व जनमानस ने अनेक कष्ट सहनकर सांसारिक सुखों का त्याग करते हुए मानवीय मूल्यों के रूप में जीवन

के उच्च आदर्श कायम कर समय-समय पर समाज को नई दिशा प्रदान की। इसी कारण भारतीय जन मेवाड़ व यहाँ के शासकों को आदर भाव से 'हिन्दुआ सूरज' के नाम से सम्मान देते आये हैं। यहाँ के शूरवीरों की शौर्य गाथाएँ देश-विदेश तक प्रसिद्ध हैं। राष्ट्र निर्माण में यहाँ के शासकों के क्रिया-कलापों में नई दिशा और ऊर्जा दी है। इसी कारण मेवाड़ राज्य के स्वरूप के निर्धारण व उच्च मापदण्ड के रूप में स्थापित रीति-नीति के प्रेरणा पुरुष बापा रावल की जानकारी वर्तमान जन में सत् पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करेगी।

भारतीय इतिहास में बापा रावल का प्रमुख स्थान है। बापा ने तत्कालीन विपरीत परिस्थितियों में भारतीय जन मानस में नई ऊर्जा का संचार कर कठोर संघर्ष से मेवाड़ की सीमाओं का विस्तार ही नहीं किया, अपितु अरब आक्रमणकारियों को भारत से बाहर भगा उनके क्षेत्र पर मेवाड़ व भारतीयता की छाप जमाई। इससे स्थानीय गौरव, स्वाभिमान और राष्ट्र प्रेम के कई कीर्तिमान स्थापित हुए तथा तत्कालीन विश्वपटल पर भारतीय शक्ति गौरवान्वित हुई। यों भारतीय जन व इतिहासवेत्ताओं ने बापा को नायक के रूप में स्थापित किया। बापा रावल के जीवन वृत्त के रूप में सम-सामयिक स्रोत में जानकारी का अभाव है। उपलब्ध-जानकारी में परवर्तीकाल के शिलालेख, प्रशस्तियों, संस्कृत व राजस्थानी भाषा की पाण्डुलिपियों, ख्यातों, बातों आदि में प्राप्त सामग्री का उपयोग किया गया है। बापा रावल ने जो शौर्य और दूरदर्शिता का परिचय दिया वह जन श्रुतियों में आते-आते अतिशयोक्तिपूर्ण बन गई। बापा रावल के व्यक्तित्व व कृतित्व का प्राप्त स्रोतों के आधार पर मूल्यांकन कर उजागर करने की महती आवश्यकता है।

बापा रावल का वंश

बापा के वंश के बारे में इतिहासकारों में मतभेद है। 977 ई. के आहड़ (आटपुर) शिलालेख में आनन्दपुर (बड़नगर) से निकले गुहदत्त ब्राह्मण से गुहिल वंश बताया। चित्तौड़ महासती के दरवाजे के पास रसिया की छत्री पर 1274 ई. (आषाढ़ शुक्ला 3, भृगुवार वि.सं. 1331) की प्रशस्ति में बापा को ब्राह्मण बताया।[1]

1. इण्डियन एण्टिक्वेरी, वोल्यूम 39, पृ. 191; वीर विनोद, भाग-1, पृ. 392-96; डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' व प्रो. भँवर शर्मा सं., 'श्रीमद एकलिंग पुराणम्' एकोविंशोध्याय: श्लोक सं. 9 पृ. 248; जनरल ऑफ द बंगाल एशियाटिक सोसायटी वोल्यूम-5 (195), पृ. 167-69

रायमल के समय में निर्मित 'श्रीमद्एकलिंगपुराणम्' में बापा को शिव वर्मा ब्राह्मण का पुत्र बताया है। डी.आर. भण्डारकर ने भी नागर ब्राह्मण वंश का बताया है। मेवाड़ राजवंश अथवा गुहिल के ब्राह्मण होने की बात के सन्दर्भ में मुहणोत नैणसी ने 17वीं सदी में अपनी ख्यात में उद्धृत किया कि गुहिल वंश के पूर्वज सूर्य के उपासक थे। उस समय के राजा के पुत्र नहीं होने से पुत्र प्राप्ति की कामना से उनकी रानी मेवाड़ और ईडर राज्य की सीमा पर स्थित अम्बादेवी के दर्शन को गई। उसका पति राजा युद्ध में मारा जाता है। वह रानी पुत्र को जन्म देती है। पति की मृत्यु होने से वह सती होने हेतु तैयार होती है। जहाँ उसे सती होना था वहाँ पर कोटेश्वर महादेव के मन्दिर में विजयादित्य नामक ब्राह्मण पुत्र प्राप्ति की कामना से शिव आराधना कर रहा था। रानी ने पुत्र को कपड़े में लपेट कर उसे सौंपा। विजयादित्य ने रानी से कहा कि यह क्षत्रिय है, बड़ा होकर शिकार आदि हिंसा करेगा। अत: इस बालक को पुत्र के रूप में स्वीकार नहीं करता। तब रानी ने उसे वचन दिया कि इसके वंशज राजा होने के बाद भी 10 पीढ़ी तक ब्राह्मणत्व का आचरण करेंगे। ऐसे रानी द्वारा विजयादित्य को आश्वस्त करने पर उस ब्राह्मण ने उस बालक को पुत्रवत् रखा।

रानी के वचनानुसार उस बालक की दस पीढ़ी तक ब्राह्मण कर्म करते हुए नागदा ब्राह्मण के रूप में पहचान बनी। ख्यात में रानी व पुत्र का नाम नहीं है, परन्तु 'अमरकाव्यम्' व 'मेवाड़ रावल राणा जी री बात' में पुत्र केशवादित्य व रानी कमलावती नाम दिया है। केशवादित्य के बाद दस पीढ़ियों तक रानी के वचनानुसार ब्राह्मण कर्म में उसके वंशज को संलग्न होना चाहिये, लेकिन बापा का नाम, आठवीं पीढ़ी में ही पाया जाता है।[2]

वि.सं. 1034 वैशाख शुक्ला एकम की एतपुर प्रशस्ति में वंशक्रम अलग है। अत: केशवादित्य से बापा रावल तक आठ पीढ़ियाँ मुख्यत: बनती हैं। आठवीं पीढ़ी में बापा हुआ उसने क्षत्रिय कर्म की पालना प्रारम्भ की। इस प्रकार तथ्यों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि केशवादित्य की माता द्वारा दस पीढ़ी तक ब्राह्मण कर्म

2. मुहता नैणसी री ख्यात, भाग-1, पृ. 1, 2; सं. डॉ. हुकमसिंह भाटी, मेवाड़ रावल राणा जी री बात, पृ. 1-3; डॉ. देव कोठारी व डॉ. शक्तिकुमार शर्मा, अमरकाव्यम्, द्वितीय स्वर्ग, श्लोक-4, श्लोक सं. 18 से 79 एवं तृतीय सर्ग, श्लोक सं. 1, प्र. 80 से 85; सं. मोतीलाल मेनारिया, राजप्रशस्ति महाकाव्यम्, तृतीय सर्ग, श्लोक सं. 4-6, पृ. 29-30; मुंहता नैणसी री ख्यात, पृ. 3; सं. देव कोठारी, भीम विलास, छन्द सं. 28-31 एवं वरता पृ. 4-5

की पालना की बात का पालन हुआ होगा। इसी के आधार पर बापा रावल का वंश विप्रकुल के रूप में जाना जाता होगा। आबू के पास अचलेश्वर मंदिर के पास मठ में मार्गशीर्ष शुक्ला एकम वि.सं. 1342 (1285 ई.) की प्रशस्ति से उक्त बात की पुष्टि होती है। इसमें वर्णित श्लोक का भावार्थ इस प्रकार है-बापा ने हारीत मुनि की चरण सेवा कर क्षात्रधर्म प्राप्त किया तथा अपना ब्रह्मतेज पुन: हारीत को अर्पित कर दिया। इसके (बापा के) वंश में उत्पन्न हुए। राजा अभी भी क्षात्रधर्म की तरह सुशोभित है।[3]

उक्त श्लोक से बापा का वंश क्षत्रिय होने के स्पष्ट संकेत मिलते हैं और मुहणोत नैणसी ने केशवादित्य की माता के सन्दर्भ में वर्णित घटना की भी पुष्टि की है। इस सन्दर्भ में ज्ञात होता है कि बापा के वंश का प्रादुर्भाव अयोध्या के राजा रामचन्द्र के ज्येष्ठ पुत्र कुश से माना जाता है। जिससे इस वंश को रघुवंश से जोड़-मेवाड़ के गुहिल वंश को सूर्यवंशी माना है। इस प्रकार का वर्णन 'राजप्रशस्ति', 'अमरकाव्यम्', 'राजरत्नाकर', 'राजविलास', 'खुम्माण रासो', 'श्यामलदास', 'पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा', 'रामवल्लभ सोमानी' आदि अनेक विद्वानों ने बापा का क्षत्रिय वंश माना है।[4]

भारतीय क्षत्रिय समाज में मेवाड़ राजवंश को सूर्यवंश का मान सम्मान दिया जाता रहा है। साथ ही मेवाड़ राजवंश के राज्यचिह्न व ध्वजा में सूर्य का चिह्न भी सूर्यवंशी होने का प्रमाण है। इस वंश की स्थापना से वर्तमान तक के सम्पूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आचरण भी क्षत्रियोचित रहे हैं। जो प्राचीन मध्य व आधुनिक इतिहासवेत्ताओं ने स्वीकार किये है। यों स्पष्ट हो जाता है कि बापा रावल का वंश क्षत्रिय था।

3. श्यामलदास, वीर विनोद, भाग-1, पृ. 383; हारीतात्किल बप्पकोऽध्रिवलय. याजेन लेभेमह:। क्षात्र घातृनिभाद्बितीर्य मुनये व्राह्मं स्वसेवाच्छलात्॥11॥ ऐतेधापि महीभुज: क्षितितले तद्वंदशसंभूतय:। शोभंते सुतरामुपात्तव पुश: क्षात्रा हि धर्मा ईव॥12॥

4. श्यामलदास, वीर विनोद, भाग-1, पृ. 239; पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास भाग-1, पृ. 65; राजप्रशस्ति महाकाव्यम् प्रथम सर्ग, श्लोक 28-29, पृ. सं. 19; अमरकाव्यम् सर्ग तृतीय, श्लोक 28; सं. डॉ. मूलचन्द पाठक, राजरत्नाकर महाकाव्यम्, सर्ग द्वितीय, श्लोक-2, सं. मोतीलाल मेनारिया; राजविलास, छन्द सं. 118, पृ. सं. 2; सं. डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, खुमाण रासो, सर्ग द्वितीय, छन्द सं. 41, पृ. 63; रामवल्लभ सोमानी, हिस्ट्री ऑफ मेवाड़ पृ. 32; कुं. देवीसिंह मंडावा, भारत और भारतीयता के रक्षक, पृ. 14 व 18; तुजुके जहांगिरी, भाग 1, पृ. 249

आहड़ के महाराज शक्तिकुमार के 977 ई. के शिलालेख में गुहदत से गुहिल वंश का प्रारम्भ व वंशावली :- 1. गुहदत 2. भोज 3. महेन्द्र प्रथम 4. नाग 5. शील 6. अपराजित 7. महेन्द्र द्वितीय 8. कालभोज 9. खोम्माण 10. मतट 11. भर्तृभट्ट 12. सिंह 13. खोम्मोण (द्वि.) 14. महायक 15. खोम्माण (तृ.) 16. भर्तृभट्ट 17. अल्लट 18. नरवाहन, 19. शालिवाहन 20. शक्तिकुमार[5]

'बापा' व 'रावल' शब्द का स्वरूप एवं अर्थ

बापा रावल के व्यक्तित्व व कृतित्व को समझने से पूर्व 'बापा' व 'रावल' शब्द क्या है। ये शब्द मूल नाम के शब्द हैं या दोनों 'विरुद्' या सम्बोधन हैं। इसका ज्ञान आवश्यक है। संस्कृत और राजस्थानी पाण्डुलिपियों, ताम्रपत्रों, शिलालेखों में 'बापा' नाम के अनेक रूप व भेद हैं। जिसमें वप्प, वोप्प, वप्पक, वाप्प, बप्पक, बप्पाक, बाप, बापा के रूप में पाते हैं। 'वप्प' और बप्प प्राकृत भाषा के शब्द हैं जिनका अर्थ 'बाप' होता है। संस्कृत में बाप का अर्थ बीज बोने वाला अथवा पिता है।[6]

'बप्प' शब्द अंचल में सम्मान सूचक रूप में प्रचलित रहा। जो बालक अथवा वृद्ध आदि को सम्मान देने हेतु प्रयोग किया जाता रहा। यह संस्कृत 'तात' शब्द के स्थान पर भी प्रयोग होने लगा। मेवाड़ में 'बापू' शब्द पुत्र के लिये व गुजरात में बापा, बापू और बापो शब्द पिता पूज्यजन या वृद्ध के लिये काम में लेते हैं। यों 'बप्प' शब्द से बापूजी, बापूदेव, बोपदेव, बापूराव, बापूलाल, बाबाराव, बापराव, बापण भट्ट, बप्पणदेव शब्दों के रूप में प्रयोग होता रहा। मेवाड़ के गुहिल वंश में बापा शब्द का विवरण इस प्रकार है।

कर्नल जेम्स टॉड, कविराजा श्यामलदास, सी.वी. वैद्य, डी.आर. भण्डारकर, क्रूम्स ए. मुखर्जी, पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा आदि अनेक विद्वानों ने 'बापा' शब्द और उसकी विभिन्नताओं पितृतुल्य सम्मान के लिये प्रयोग होना बताया है। टॉड व श्यामलदास तो स्पष्ट रूप से 'बापा' राजा का नाम नहीं इसे तो

5. इण्डियन एण्टिक्वेरी जि. 39, पृ. 191

6. वल्लभी के शासकों के दान पत्रों में पिता शब्द के स्थान पर 'बप्प' शब्द। नेपाल के लिच्छवी वंश वि.सं. 692 (635 ई.) के शिलालेख में तथा वल्लभी के वि.सं. 823 (766 ई.) दानपत्र में बाप शब्द का प्रयोग पिता के अर्थ में हुआ है। नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग-1, पृ. 245-50. टिप्पणी 10-21

खिताब अथवा उपाधि बताया है। यों 959 ई. के उनवास गाँव के शिलालेख तथा 971 ई. के नरवाहन के एकलिंगजी शिलालेख में बापा को गुहिल वंश के शासकों में चन्द्रमा के समान तेजस्वी बताया है।[7] इस प्रकार उपर्युक्त सन्दर्भ 'बापा' मूल नाम नहीं बता उसे विरुद् अथवा किसी नाम का सम्बोधन होना माना है, लेकिन यह सही है कि 'बापा' गुहिल वंश के एक शासक के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल हुआ।

विख्यात राजवंशों के नरेशों के नाम के साथ सम्बोधन के रूप में पहचान की परम्परा रही है। गुहिल वंश के शासकों के नामों के साथ विभिन्न समय में अलग-अलग सम्बोधन से पहचाना जाता रहा है। गुहिल वंशी बापा से पूर्व चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा के आधार पर ज्ञात होता है कि ग्रहादित्य से पूर्व की 24 पीढ़ी के राजाओं के नाम के साथ 'आदित्य' पदवी से पहचान थी। 'राजप्रशस्ति महाकाव्यम्' में भी ज्ञात होता है कि अयोध्या का राजा विजय अयोध्या से दक्षिण में जाकर राज्य करने लगा तब आकाशवाणी हुई कि आप राजा पदवी के स्थान पर आदित्य पदवी धारण करें। यों उससे लगाकर ग्रहादित्य तक के राजाओं की आदित्य पदवी रही। 'अमरकाव्यम्' में विवरण मिलता है कि ग्रहादित्य से गहलोत कहलाये इसमें ग्रहादित्य तक 14 आदित्यों का वर्णन मिलता है। उससे आगे रावलों का मिलता है।[8]

'रावल' का नाम के साथ सम्बोधन सर्वप्रथम बापा के साथ मिलता है। चित्तौड़-उदयपुर पाटनामा में पाते हैं कि हारीत राशि ने बापा को 12 वरदान दिये उसमें एक वरदान में 'रावल' नाम से पहचान का है। 'राणा रासो' में हारीत राशि द्वारा बापा को आशीर्वाद के रूप में बताया कि-दूसरे राजा अपने राज्य में राजा, राय आदि उपाधियाँ धारण करते हैं; उसी प्रकार तुम्हें लोग 'रावल' के विरुद् से पहचानेंगे। तुम्हारे वंश में और भी राजा होंगे बापा के सिर पर हाथ रखकर हारीत ने हँसते हुए कहा कि उनको भी 'रावल' नाम से पहचानेंगे।

7. बम्बई एशियाटिक सोसायटी जनरल जिल्द-22, पृ. 166; वरदा, भाग-7, अंक 12-13; श्यामलदास-वीर विनोद, भाग-1, पृ. 250; रामवल्लभ सोमानी, हिस्ट्री ऑफ मेवाड़ पृ. 41

8 सं. डॉ. मनोहरसिंह राणावत-चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा, भाग-1, पृ. 48; राजप्रशस्ति महाकाव्यम्, सर्ग द्वि. श्लोक सं. 36-37, पृ. 27, सर्ग तृ., श्लोक 5, पृ. 30; सं. डॉ. देव कोठारी व डॉ. शक्तिकुमार शर्मा, अमर काव्यम्, सर्ग द्वि. श्लोक 38-39, पृ. 84

राजविलास में वर्णन है कि हारीत राशि ने सपने में आकर कहा है कि मैं तुमसे सन्तुष्ट हूँ। मेवाड़ क्षेत्र में तुम्हारा अचल शासन रहेगा। अब मैं तुम्हें रावर (रावल) पद प्रदान करता हूँ। इस पद से तुम्हारे वंशज भी जाने जावेंगे। भीम विलास में ग्रहादित्य के वाद 'रावल' पदवी आरम्भ होना बताया है। उस प्रकार पाते है कि 'रावल' विरुद् बापा के समय से ही प्रारम्भ हुआ।[9]

अव हमें 'रावल' शब्द का व्याकरण और व्याख्या को समझना आवश्यक है। व्याकरण की दृष्टि से 'रावल' शब्द राजकुल शब्द से निष्पन्न होता है। महाराष्ट्री प्राकृत भाषा में अघोष वर्ण 'अ' में बदलते हैं। उक्त राजकुल शब्द में 'ज' तथा 'कु' वर्ण अघोष वर्ण है। अत: ये दोनों 'अ' में बदल जाते हैं तव शब्द यों वनता है रा+अ+अ+उ+ल=राउल। इसमें 'उ' वर्ण 'व' में वदल जाने से 'रावल' शब्द वनता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से 'राजप्रशस्ति महाकाव्यम्' व 'अमरकाव्यम्' के लेखक रणछोड़ भट्ट ने 'रावल' विरुद् धारण करने को बड़े दार्शनिक व्याख्या से स्पष्ट किया की-नृपति वाष्प (बापा) 'रावल' पदवी को धारण कर सुशोभित हुआ, इसमें 'राज्यातिपूर्णत्व' शब्द का पहला अक्षर, 'रा', 'वरत्वं' शब्द का पहला अक्षर 'व' तथा 'लक्ष्मीयत्व' शब्द का प्रथम अक्षर 'ल' इन तीनों शब्दों के प्रथम तीन अक्षरों से - रा+व+ल से 'रावल' शब्द का निर्माण हुआ। यहाँ राज्यातिपूर्णत्व - राज्य से परिपूर्ण, 'वरत्वं' - श्रेष्ठ, लक्ष्मीमयत्व लक्ष्मीमय-धन से परिपूर्ण है।

'राजरत्नाकर' के लेखक सदाशिव नागर ने रावल शब्द की व्याख्या में बताया कि युद्ध भूमि में बापा विशाल तलवार से बड़े-बड़े शत्रुओं को मारकर वह रणपति राजा (बापा) मूँछों पर उंगुलियों से ताव देकर सिंह की सी गर्जना (रव) करता था, इसलिये वह, संसार में 'र व' शब्द ध्वनि से 'रावल' (रावं लातीति) नाम से पुकारा गया।

श्यामलदास ने 'वीर विनोद' में इस बारे में लिखा कि बापा के 'रावल' विरुद् के बारे में कोई प्रमाण नहीं मिलता है, लेकिन यह हो सकता है कि बापा का बचपन में जिस पुजारी ने पालन पोषण किया वे रावल कहलाते थे। अत: बापा ने

9. सं. डॉ. मोतीलाल मेनारिया, राजविलास, प्रथम विलास, छन्य सं. 237, पृ. 24, सं. डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, राणा रासो छन्य सं. 58-59, पृ. 176, 177; सं. डॉ. मनोहरसिंह राणावत, चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा, भाग-1, पृ. 64

अपने पालनकर्त्ता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु अपने नाम के साथ 'रावल' सम्बोधन को जोड़ा हो। श्यामलदास यह भी कहते हैं कि अम्बा भवानी ने बापा की माता से कहा कि तुम्हारा पुत्र बड़ा प्रतापी होगा, अत: वह राजा का खिताब छोड़कर रावल की पदवी धारण करेगा। तब माता के आदेश पर बापा ने यह विरुद् धारण किया। श्यामलदास लिखते हैं कि 'रावल' पद बहादुर राजपूत को शोभा देने वाला है अत: 'रावल' शब्द युद्ध में गर्जना करने वाले बहादुर के लिये आता है। यों 'रावल' शब्द की महत्त्वपूर्ण व्याख्या से अलग-अलग विद्वानों ने मत व्यक्त किये। इसे श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही ऐसी पदवी से सम्मानित होते हैं अत: प्रथम बार बापा को रावल पदवी से सम्मानित होना पाया जाता है। अब हम बापा के श्रेष्ठ व्यक्तिव कृतित्व का वर्णन कर उसके जीवन से प्रेरणा लें।[10]

कालभोज व बापा

बापा के बारे में अध्ययन से ज्ञात होता है कि 'बापा' सम्बोधन है या मूल नाम अगर सम्बोधन है तो किस शासक का? संस्कृत, राजस्थानी बातों एवं गीतों के साथ-साथ 'राजप्रशस्ति', 'अमरकाव्यम्', 'भीमविलास', 'मुंहता नैणसी री ख्यात', 'मेवाड़ रावल राणा जी री बात' आदि अनेक डिंगल गीत में बापा का नाम गुहिल वंश के शासकों की नामावली में मिलता है। इसी तरह नरवाहन के 971 ई. के शिलालेख में व चीरवा में एक मंदिर की 1273 ई. की प्रशस्ति में, चित्तौड़ में रसिया की छत्री के 1274 ई. के शिलालेख में, आबू पर अचलेश्वर मंदिर के पास मठ के 1285 ई. के शिलालेख में, रणकपुर के 1439 ई. के शिलालेख में व कुम्भलगढ़ पर मामादेव मन्दिर प्रशस्ति में मूल बापा का नाम शासक के रूप में लेने की जानकारी प्राप्त होती है।

डूँगरपुर के महारावल पत्ता के ऊपर गाँव के शिलालेख 1404 ई. में बापा का

10 राज्यातिपूर्णत्ववरत्नलक्ष्मीयत्वशब्दादिगवर्णयुक्ताम्। तां रावलाख्यां पदवीं दधानोवाश्पपाभिधान: सरराज राजा। राज प्रशस्ति महाकाव्यम, सर्ग तृतीय, श्लोक सं. 19 पृ. 33; अमरकाव्यम्, सर्ग तृतीय, श्लोक सं. 67 पृ. 100
खड्गेन तेन महता महतोउप्यरातीत्, हत्वा रणांगणगतो नृपती रणेश:।
श्मश्रु प्रभुज्यकर जेन च सिंह राव,
लातीत्यतो जगति रावल इत्यभाणि।
राजरत्नागर, सदाशिव नागर, सर्ग द्वितीय, श्लोक सं. 7, वीर विनोद, भाग 1, पृ. 253;

पुत्र खुम्माण होना मिलता है। साथ ही 'राजप्रशस्ति', 'अमरकाव्यम्', 'राजरत्नाकर' 'राजविलास', 'मुंहता नैणसी री ख्यात', 'भीम विलास' 'मेवाड़ रावल राणा जी री बात' में भी बापा का पुत्र खुम्माण दिया है। आटपुर (आहाड़) के 977 ई. के शिलालेखों में खुम्माण के पिता का नाम कालभोज मिलता है। एतपुर की 977 ई. की प्रशस्ति में भी कालभोज का उत्तराधिकारी खुम्माण बताया गया है। यों इन शिलालेखों के आधार पर हम बापा का पुत्र खुम्माण व कालभोज का पुत्र भी खुम्माण पाते हैं तो कालभोज व बापा रावल नाम का एक ही व्यक्ति हो सकता है। ऐसी स्थिति में कालभोज का विरुद् बापा हो सकता है।

गौरीशंकर हीराचन्द ओझा व रामवल्लभ सोमानी ने भी कालभोज व बापा को एक ही व्यक्ति माना है।[11] लेकिन समसामायिक स्रोत के अभाव में और शोध की आवश्यकता है।

बापा का प्रारम्भिक जीवन

बापा के जीवन परिचय की सम-सामायिक प्रामाणिक जानकारी का अभाव है। परवर्ती कालीन स्रोतों में बिखरी जानकारी में भी उसके स्रोत की जानकारी नहीं मिलती है। शिलालेखों में नामोल्लेख के साथ उसके उत्तराधिकारी की जानकारी मिलती है। यों ज्ञात होता है कि परवर्तीकालीन स्रोत में प्राप्त तथ्यों के प्राचीन व समकालीन स्रोत का अभाव है। पुरानी बातों, कवियों की सुनी-सुनाई बातों के आधार पर ही लेखन कार्य होता रहा है। बापा के जन्म व स्थान के बारे में निम्न ज्ञात ज्ञान इस प्रकार है -

'श्रीमद्एकलिंगपुराणम्' में बापा के पिता का निवास चित्तौड़ के पास आनन्दपुर बताया गया है। शिव शर्मा के संन्यास लेने व उसकी मृत्यु पर उसके ज्येष्ठ पुत्र बापा ने उसकी अन्त्येष्टि की। अत: बापा का पिता शिव शर्मा

11. राज प्रशस्ति महाकाव्यम्, सर्ग तृतीय, श्लोक 6, पृ. 30;
अमर काव्यम्, सर्ग तृतीय श्लोक 2, राजविलास छन्द सं. 136-143
भीम विलास छन्द सं. 30पृ. 5
मुंहता नैणसी की ख्यात पृ. 3
सं. डॉ. हुकमसिंह भाटी, मेवाड़ रावल राणा जी री बात, बम्बई ऐशियाटिक सोसाइटी, जनरल जिल्द-12, पृ. 166-167, डॉ. प्रेमलता शर्मा-श्रीमद् एकलिंग माहात्यम, पृ. 172, रामवल्लभ सोमानी, हिस्ट्री ऑफ मेवाड़ पृ. 40-43; गौरीशंकर हीराचन्द ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग-1, पृ. 102-106; मेवाड़ गौरव स्मारिका, युग पुरुष बप्पा रावल पृ. 23-24; कुम्भलगढ़ प्रशस्ति, श्लोक सं. 138; ऐपिग्राफिया इण्डिया जिल्द 16, पृ. 342-351;

बताया है।[12] 'श्रीमदएकलिंग माहात्म्यम्' में डॉ. प्रेमलता शर्मा ने पुराने कवियों के कथनानुसार आनन्दपुर से आया हुआ विप्र कुल को आनन्द देने वाला गुहिल वंश का गुहदत्त हुआ बताया है। इसका पुत्र मेदपाट वसुधा का पालन करने वाला बापा हुआ। इस प्रकार दोनों में बापा के पिता के नामों में क्रमश: शिव शर्मा व गुहदत्त होना मिलता है।[13]

'अमरकाव्यम्' में बापा का जन्म घासा (मावली) में वर्ष 176 में होना बताया गया है। 176 वर्ष किसका है अथवा वि.सं. व शक संवत है ऐसी कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है। पिता ग्रहादित्य और माता पँवार वंश की गंगादे होना बताया है।[14]

'राजप्रशस्ति महाकाव्यम्' में ग्रहादित्य के सभी पुत्रों को गुहिलोत व ज्येष्ठ पुत्र का नाम बापा बताया है।[15] 'राजरत्नाकर महाकाव्य' में वायुपुराण के अनुसार बापा के पिता का नाम गुहदत्त बताया है।[16] राजविलास में कवि मान ने बापा के पिता का नाम ग्रहादित्य व माता का नाम संग्रामसिंह सोलंकी की पुत्री धनवन्ती से बापा का जन्म होना मिलता है।[17] 'राणा रासो' में दयालदास ने बापा के पिता का नाम इकलिंगदत्त लिखा है।[18]

'खुमाण रासो' में दलपति विजय ने बापा के पिता का नाम पंजर व माता के नाम के स्थान पर रानी शब्द का प्रयोग किया है।[19] 'भीम विलास' में किसना आढ़ा ने बापा के पिता ग्रहादित्य व माता का नाम नहीं दिया है।[20] 'मुंहता नैणसी री ख्यात' में भी बापा का पिता गुहदत्त (ग्रहादित्य) बताया गया है।[21] मेवाड़ रावल राणा जी री बात में बापा के पिता ग्रहादित्य व माता राव चाँदो की पुत्री होना लिखा है।[22] चित्तौड़

12. डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' व प्रो. भँवर शर्मा, श्रीमद् एकलिंगपुराणम्, एकोनविंशोऽध्याय, श्लोक सं. 8-9 व 26
13. डॉ. प्रेमलता शर्मा, सम्पादित श्रीमदेकलिंग माहात्म्यम् के परिशिष्ट में उद्धृत भिन्न पाठ पृ. 172
14. डॉ. देव कोठारी व डॉ. शक्तिकुमार शर्मा, अमरकाव्यम्, सर्ग द्वितीय, श्लोक सं. 1-2, पृ.85
15. राजप्रशस्ति महाकाव्यम्, सर्ग तृतीय, श्लोक सं. 6, पृ.30
16. डॉ. मूलचन्द पाठक, राजरत्नाकर महाकाव्यम्, सर्ग द्वितीय, श्लोक सं. 2, पृ. 112
17. डॉ. मोतीलाल मेनारिया, राजविलास, पृ. 13, 14, 15
18. सं. डॉ. व्रजमोहन जावलिया, राणा रासो, छन्द सं. 42, पृ. 165
19. सं. डॉ. व्रजमोहन जावलिया, खुम्माण रासो, छन्द सं. 33, पृ.62
20. डॉ. देवकोठारी, भीम विलास, छन्द सं. 30, पृ.5
21. मुंहता नैणसी री ख्यात भाग-1, पृ.3
22. डॉ. हुकमसिंह भाटी, मेवाड़ रावल राणा जी री वात, पृ.3

उदयपुर पाटनामा में बड़वा द्वारा बताया गया कि गढ़ बेराट पर पातसाह ने आक्रमण किया वहाँ रूपसी नाम का राजा राज्य करता था। वह कलयुग के संवत 3211 व विक्रम सम्वत 166 में युद्ध करता हुआ काम आया। उसकी रानी चहुवांण विचित्र कुंवर गर्भवती थी वो पुराने कपड़े पहनकर बेराट गढ़ से भाग कर अपने पीहर अवंती पुरी उज्जैन आई। वहाँ से चित्तौड़ होते नागदा (कैलाशपुरी) पहुँची। वहाँ नागदा ब्राह्मण के घर बापा नामक पुत्र को जन्म देती है।[23] प्राचीन राजस्थानी गीतों में ग्रहादित्य को बापा का पिता बताया है।[24]

कर्नल जेम्स टॉड ने बापा का जन्म वि.सं. 769 (712-13 ई.) माना है तथा चित्तौड़ पर अधिकार वि.सं. 784 (727 ई.) में करना बताया है।[25] श्यामलदास ने 'वीर विनोद' में बापा के पिता का नाम अपराजित लिखा है जो अन्य स्रोत में नहीं मिलता है।[26] इतिहास राजस्थान में चारण रामनाथ रत्नू ने बापा के पिता नागादित्य लिखा की कई लोग ग्रहादित्य भी कहते हैं।[27] पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने उदयपुर राज्य के इतिहास में अपराजित के बाद महेन्द्र द्वितीय और उसके बाद कालभोज (बापा) मेवाड़ का शासक गुहदत्त (गुहिल) से आठवीं पीढ़ी में होना बताया है।[28] रामवल्लभ सोमानी ने 'हिस्ट्री ऑफ मेवाड़' में ओझा जी के मत का सम्मान किया।[29]

प्राप्त स्रोत में ज्ञात होता है कि बापा के पिता के नामों में शिव शर्मा, पंजर इकलिंग दत्त, राजा रूपसी व अपराजित नाम के एक-एक स्रोत है, जबकि ग्रहादित्य (गुहादित्य) नाम का उल्लेख 10 मतों में मिलता है। प्राप्त स्रोतों के मूल स्रोत का अभाव होने से किसी एक की प्रामाणिकता पर शोध की आवश्यकता है। इन सब स्रोतों के बाद गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने अभिलेखीय स्रोतों को आधार

23. सं. डॉ. मनोहरसिंह राणावत, चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा, भाग-1, पृ. 63
24. प्राचीन राजस्थानी गीत, भाग-4, पृ. 125
25. कर्नल जेम्स टॉड, एनल्स एण्ड एन्टिक्विटीज़ ऑफ राजस्थान, वोल्यूम-1, पृ. 269
26. श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 1, पृ. 250-251
27. चारण रामनाथ रत्नू-इतिहास राजस्थान, पृ. 23
28. पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग-2, पृ.98
29. रामवल्लभ सोमानी, हिस्ट्री ऑफ मेवाड़ पृ. 39-40

मान बापा के पिता महेन्द्र द्वितीय को बताया वही मत वर्तमान में प्रचलित है। इसी तरह बापा की माता के नामों में गंगादे, धनवती, विचित्र कुंवर के नाम मिलते हैं। जन्म स्थल के रूप में भी अलग-अलग स्रोत में नामों की एकरूपता नहीं है। जन्म स्थान के रूप में आनन्दपुर (चित्तौड़), घासा (मावली); नागदा (कैलाशपुरी) के रूप में नामों की जानकारी प्राप्त होती है। बापा ने घासा गाँव के पास बड़े तालाब का निर्माण करवाया घासा व कैलाशपुरी की दूरी भी ज्यादा नहीं है। अत: घासा या नागदा स्थानों में से एक स्थान पर बापा जन्म हुआ।

बापा के बचपन के बारे में प्रचलित मान्यता में नागदा में व्यतीत होना ऐसा माना जाता है। 'श्रीमद्एकलिंगपुराणम्' में बापा का जन्म आनन्दपुर चित्तौड़ में होना मिलता है तो 'अमरकाव्यम्' के विवरण में घासा (मावली) में होना मिलता है। 'पाटनामा' के विवरण में नागदा जन्म स्थान के रूप में मिलता हैं। 'पाटनामा' में मिलता है कि 'बरस' पाँच का बापोजी हुअवा गायां का वाछरू चरावा लागा। राजविलास के विवरण में बापा का बचपन नागदा में व्यतीत हुआ। वह 11 वर्ष की आयु में पाँच सौ बालकों को साथ लेकर एक राजा की तरह वन में खेला करता था।[30]

'खुम्माण रासो' में लिखा गया है कि बापा आठ वर्ष के होने पर गायें चराने वन जाने लगा।[31] चारण रामनाथ ने इतिहास राजस्थान में लिखा कि बापा तीन वर्ष का हुआ तब उसे नागेन्द्र (नागदा) में पहुँचाया गया और बड़ा होने पर गायें चराने का कार्य करने लगा।[32] रामवल्लभ सोमानी ने 'हिस्ट्री ऑफ मेवाड़' में लिखा कि बापा के पिता ईडर के भीलों के साथ युद्ध में मारे जाने के बाद बापा अकेला नागदा की पहाड़ियों में रहने लगा। तब एक ब्राह्मण महिला ने अपनी गायों को चराने के लिये उसे रख लिया।[33] बापा के बचपन में जीवन संघर्ष की बातों में सभी स्रोत एक मत हैं। बचपन में ब्राह्मण के यहाँ गायें चराना और जंगल के आम जन के सम्पर्क में

30. डॉ. मनोहरसिंह राणावत, चित्तौड़, उदयपुर पाटनामा, भाग-1, पृ. 63;
मोतीलाल मेनारिया, राज विलास, बापा रावल उत्पत्ति प्रसंग, छन्द सं. 124-144, पृ. 13-25
31. डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, खुम्माण रासो, छन्द सं. 38, पृ. 63
32. चारण रामनाथ रत्नू, इतिहास राजस्थान, पृ. 23
33. रामवल्लभ सोमानी, हिस्ट्री ऑफ मेवाड़, पृ. 41

आना उसके जीवन की नई उपलब्धियों का मार्ग प्रदान करने लगा। सामान्यत: बापा के बचपन की गतिविधियों की विस्तृत जानकारी का अभाव है, लेकिन जंगल के विवरण के साथ ही उसे योग्य मार्गदर्शक के रूप में हारीत राशि के रूप में योग्य गुरु मिलता है। इस पर सभी प्राप्त स्रोत एक मत है। हारीत राशि के सम्पर्क से बापा की सोयी प्रतिभा को जगाने का नया मार्ग मिलता है। जिसके बल पर बापा ने भारतीय इतिहास में अपना स्थान ही नहीं विदेशी आक्रमणकारियों से संघर्ष की एक नई विधा कायम की। वह हारीत राशि व बापा से सम्बन्धित जानकारी भी अति आवश्यक है। जिससे बापा के व्यक्तित्व पर सही प्रकाश डाला जा सके।

हारीत राशि

भारतीय धर्म ग्रन्थों में शिव के 28 अवतारों का विवरण मिलता है। इन विभिन्न अवतारों में शिव के विभिन्न नाम मिलते हैं। इनमें अन्तिम अवतार के रूप में लकुलीश अन्तिम अवतार माना जाता है। महाभारत के शान्ति पर्व में पाँच प्रकार के दर्शनों के विवरण हैं उनमें पाशुपत दर्शन एक दर्शन है। वायु पुराण व लिंग पुराण में पाशुपत का उद्‌भव भारतीय मान्यतानुसार द्वापर युग में होना माना जाता है। यह मान्यता है कि द्वापर युग में कृष्ण और द्वैपायन व्यास के साथ शिव भी हाथ में लकुश, नकुल या लाठी लेकर लकुलीश के रूप में पैदा हुए। यों लकुलीश या नकुलीश मत पाशुपत दर्शन का ही एक भाग है। संस्कृत में लकुलीश शब्द के स्थान पर नकुलीश शब्द का प्रयोग होता है।

धीरे-धीरे लकुलीश मत के चार आचार्यों के रूप में मान्यता स्थापित होती है। जो कुशिक, गार्ग्य, कौरूप और मैत्रेय नाम से विख्यात होने लगे इन चारों आचार्यों ने देश के विभिन्न स्थानों पर अपना प्रचार प्रारम्भ किया। राजस्थान में लकुलीश मत भृगुकच्छ से फैला। इस मत के मन्दिर झालरापाटण, मेनाल, बिजोलिया, जाडोल्यो, तिलस्मा बाडोली, गंगरार, अर्थूणा और गाँव (सिरोही) एवं एकलिंगजी कुशिकाचार्य के मत से सम्बन्धित हैं। लकुलीश मंदिर की मूर्तियों में एक हाथ में लकुटी (लाठी) तथा दूसरे हाथ में बिजोरा फल होता है। ये मूर्तियाँ यौगिक मुद्रा में होती हैं। जो जैन मूर्तियों से काफी मिलती-जुलती होती हैं।

हारीत राशि कुशीक मत के अनुयायी थे। लोक मान्यता है कि हारीत राशि हरियाणा क्षेत्र के गौड़ ब्राह्मण थे। वे पाशुपत-लकुलीश मत में दीक्षित चमत्कारिक

योगी थे। ये एकलिंगजी के आस-पास जंगल में साधना केन्द्र बना तपस्या में लगे थे। वर्तमान में एकलिंगजी मन्दिर के साथ उत्तर-पश्चिम की ओर दरवाजे से लगा स्थान 'हारीत आश्रम' के नाम से जाना जाता है। उदयपुर शहर के प्राचीन फूटे दरवाजे के गौड़ चौक में जोशियों का रावला में रहने वालों के वंशजों को महाराणा कर्णसिंह द्वारा हरियाणा नरवरगढ़ से मेवाड़ में हारीत राशि के वंश होने के कारण लाया गया। ऐसी इन लोगों की मान्यता है।

हारीत के नाम के साथ राशि शब्द पाशुपत मत के लकुलीश आचार्यों का सम्बोधन है। 'राशि' को 'ऋषि' पुकारना अथवा पहचानना अशुद्ध है।[34]

शिलादित्य के समकालीन बाणभट्ट ने 'कादम्बरी' कथामुखम् में हारीत के व्यक्तित्व का चित्रण किया – बाणभट्ट ने हारीत को जनजाति का आत्मज बताकर सभी विधाओं में दक्ष बताया। उनकी आकृति पर इतना तेज था कि वे दूसरे अग्निदेव हों उनका स्वरूप उगते सूर्य के मण्डल सा बताया कंधे पर लटकने वाली जटाओं से युक्त हारीत चोटियों का जूड़ा बाँधे हुए बताया स्फटिक मणि की जपमाला उनके दाहिने कान पर लटकती हुई सुशोभित हो रही थी। ललाट पर त्रिपुण्ड था। उनके बायें हाथ में स्फटिक का कमण्डलु, उनके कंधे के ऊपर नीली और पीली कांजिवाला मृगचर्म था, उनके दाहिने हाथ में पलाश का दण्ड, उनका शरीर कोमल और वल्कल से आच्छादित वे मेखला धारण किए थे। उनमें दोष नाम की चीज नहीं थी। जल में रहकर तपस्या करते थे, वर्ण उनका कपिल था, वे इन्द्रियों को वशीभूत किये थे। शरीर से कृशकाय और उनकी नाभि ऊँचे-नीचे शेख के आवर्तमण्डल के समान थी। हारीत बार-बार पुष्कर तीर्थ में निवास करते, ब्रह्म-समाधि में प्रवेश किये थे। संसार के बन्धनों से रहित मोक्ष के अभिलाषी थे। वे न केवल सोमपायी थे, अपितु सूर्य किरणों का भी पान करते थे। हारीत के नाम की स्मृति में उनको अग्नि के समान व्यक्तित्व बताया है। इसमें उनका वैष्णयीय दृष्टिकोण प्रकट होता है न की शैव। मेवाड़ में हारीत के शैव होने की मान्यता रही है।[35]

'जुगनू' ने वाल्मीकि 1, 55, 3-4 के आधार पर हारीत को सेना के

34. मेवाड़ गौरव स्मारिका-2011, युगपुरुष बप्पा रावल, पृ.30-32

35. वही, डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' का आलेख

नेतृत्वकर्त्ता के रूप में वाल्मीकि रामायण के समान मान्यता दी है। उसमें विदेशियों के संघर्ष के प्रसंगों को रामायण की कथा रूप में सम्पादित करना वताया है। वाल्मीकि रामायण कार ने विश्वामित्र और वशिष्ट के युद्ध के रूप में भारतीय-विदेशी संघर्ष को परिकल्पित कर लिखा की विश्वामित्र की सेना का संहार वशिष्ट ने योगबल से पैदा कामधेनु से उत्पन्न विनाशक शास्त्रों के प्रयोग से विभिन्न शक्तियों के रूप में विश्वामित्र को परास्त करना बताया है। अत: ज्ञात होता है कि हारीत राशि के पास विशाल सैन्य नेतृत्व था।[36]

'एकलिंग पुराण' की मान्यतानुसार हारीत राशि ने एकलिंगजी से दक्षिण की ओर पहाड़ी पर 'राष्ट्र सेना' माता (राठसण देवी) की स्थापना देश-रक्षार्थ सैन्यबल स्थान के रूप में करना बताया है। राष्ट्र सेना की कृपा से ही एकलिंगजी का प्रकट होना भी लिखा है।[37] मेवाड़ रावल राणा जी री बात में भी राष्ट्र सेना माता की उपासना हेतु हारीत का आना बताया है और हारीत राशि के आशीर्वाद से एकलिंगजी का प्रसन्न होना तथा बापा को राज्य देना बताया है। इस पुस्तक में 'नैणसी की ख्यात' के आधार पर बताया है कि हारीत राशि ने राठासेण देवी के यहाँ 12 वर्ष तपस्या की इसके बाद देवी को प्रसन्न कर बापा को राज्य देने का वर माँगा तब देवी ने शिव उपासना कर प्राप्त करने को कहा इस पर हारीत ने शिव स्तुति की जिससे पृथ्वी को चिर एकलिंगजी का ज्योति लिंङ्ग प्रकट हो वर माँगने को कहा। तब हारीत ने बापा के लिये मेवाड़ का राज्य माँगा। राठासण व महादेव ने प्रसन्न हो वरदान दिया।[38]

'चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा' में बताया गया है कि बापा पाँच वर्ष का हुआ तब बाछरू (बछड़ा) चराने लगा वहाँ एकलिंगजी में हारीत राशि तपस्या करते थे वहाँ बापा ने हारीत राशि की सेवा कर उन्हें प्रसन्न कर उनसे बारह वरदान प्राप्त किये :- 1. तेरे पाँव तले चार युग तक का राज्य रहेगा। 2. जहाँ-जहाँ तेरे पाँव फिरेंगे वहीं तेरा राज्य रहेगा। 3. बापा तेरी सतयुगी 21 हाथ की लम्बाई होगी। 4. तेरे शस्त्र का घाव नहीं होगा। 5. तुजमें तीस मन की तलवार उठाने की क्षमता होगी। 6. तेरा सम्बोधन ''रावल'' शब्द नाम के साथ होगा। 7. तेरे भोजन में सवा मन अनाज का आहार होगा। 8. सदा तेरी युद्ध में विजय होगी। 9. तेरी निगाह से दूसरे की निगाह

36. वही

37. वही

38. सं. डॉ. हुकुमसिंह भाटी, मेवाड़ रावल राणा जी री बात, पृ. 3, 81-82

मिलने पर उसकी आधी शक्ति तेरे में आ जायेगी। 10. तुझे चित्तौड़ का राज्य प्राप्त होगा। 11. गजनी तक राज्य होगा। 12. तू चक्रवर्ती परम्परानुसार राज्य करेगा।"[39]

'राणा रासो' में बताया कि बापा महादेव की सेवा में लीन रहकर एक योद्धा की तरह जंगलों में विचरण करता। जंगल में उसने हारीत राशि को देख उनके चरणों में वंदन की और हारीत राशि की ईष्ट देव की तरह सेवा की।[40] इसी भाँति 'खुम्माण रासो' में स्पष्ट है कि बापा आठ वर्ष का होने पर जंगल में गाय चराने लगा। उन गायों में से एक वृक्षों के मध्य शिव मूर्ति पर दूध झराती थी। पास में पहाड़ की गुफा में हारीत राशि तपस्या करता था। बाबा गाय ढूँढ़ते-ढूँढ़ते हारीत के पास पहुँचता है। बापा ने श्रद्धा पूर्व प्रणाम किया तब हारीत ने प्रेम से पास में बैठा दिया। बापा ने अपने परिचय में क्षत्रिय होना बताया माँ के साथ रहना बताया और श्रद्धा से कहा, "आपके दर्शन से मेरे सभी कष्ट दूर हो गये।"

इस पर हारीत ने एकलिंगजी की विधिपूर्वक प्रतिदिन पूजा और यज्ञ करने सदा योग-अभ्यास करने को कहा। 'राजविलास' में लिखा कि – एक दिन बापा ने हारीत राशि को गुफा में एकलिंगजी की पूजा करते देखा। वह प्रभावित हो हारीत की सेवा पूजा करने लगा। छः माह नियमित पूजा करने पर हारीत राशि खुश हो गये। कर्नल जेम्स टॉड ने लिखा कि बापा नागदा के जंगलों में घूमता गायें चराता तब हारीत राशि से मिला जो झाड़ी में स्थापित एकलिंगजी की पूजा करता था। हारीत ने बापा में राजा के लक्षण देख पास रखा। बापा की एकलिंग व हारीत में श्रद्धा थी।

श्यामलदास ने लिखा कि बापा होशियार होकर गायें चराता तब भोडेला तालाब के पीछे हारीत मिला। बापा तब से हारीत की सेवा में लग गया। तभी बापा को एकलिंग के दर्शन बासों में स्थित शिवलिंग के रूप में हुए। जिससे बापा को काफी बरकत (उन्नति) धन/ सहायता प्राप्त हुई।[41]

39. सं. डॉ. मनोहरसिंह राणावत, चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा, भाग-1, पृ. 63-85; सं. डॉ. हुकुमसिंह भाटी, सिसोद वंशावली एवं राजस्थान के रजवाड़ों की वंशावलियें, पृ. 23-27; सं. डॉ. हुकमसिंह भाटी, मेवाड़ रावल राणा जी री बात, पृ. 81

40. सं. डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, राणा रासो, छन्द सं. 44-51, पृ. 166-173

41. सं. डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, खुम्माण रासो, छन्द सं. 38-47, पृ. 63-64; मोतीलाल मेनारिया, 'राज विलास', छन्द सं. 145-151, पृ. 15-16; कर्नल जेम्स टॉड, एनल्स एन्तिक्विटीज ऑफ राजस्थान, वोल्यूम 1, पृ. 260-266; श्यामलदास-वीर विनोद, भाग-1, पृ. 251



बापा रावल समाधि स्थल, एकलिंगजी



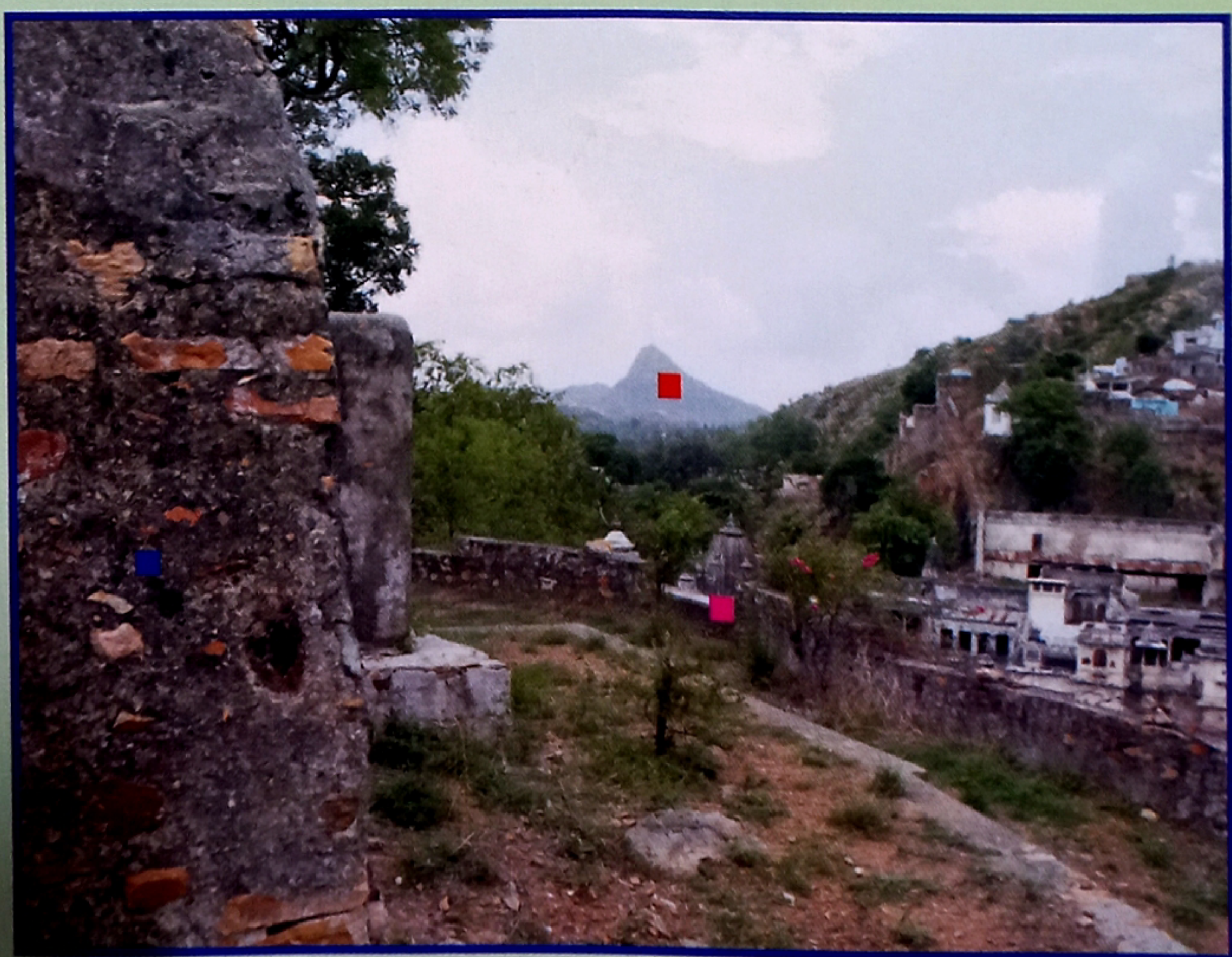
बापा रावल समाधि स्थल, एकलिंगजी



बापा रावल समाधि स्थल, एकलिंगजी (हारीत राशि एवं बापा रावल)



एकलिंगजी हारीत राशि आश्रम प्रांगण में शिलालेख एवं भूमिगत अध्यात्म स्थल



■ एकलिंगजी स्थित हारीत राशि आश्रम ■ एकलिंगजी मन्दिर

■ पहाड़ी पर राष्ट्रासेन माता मन्दिर



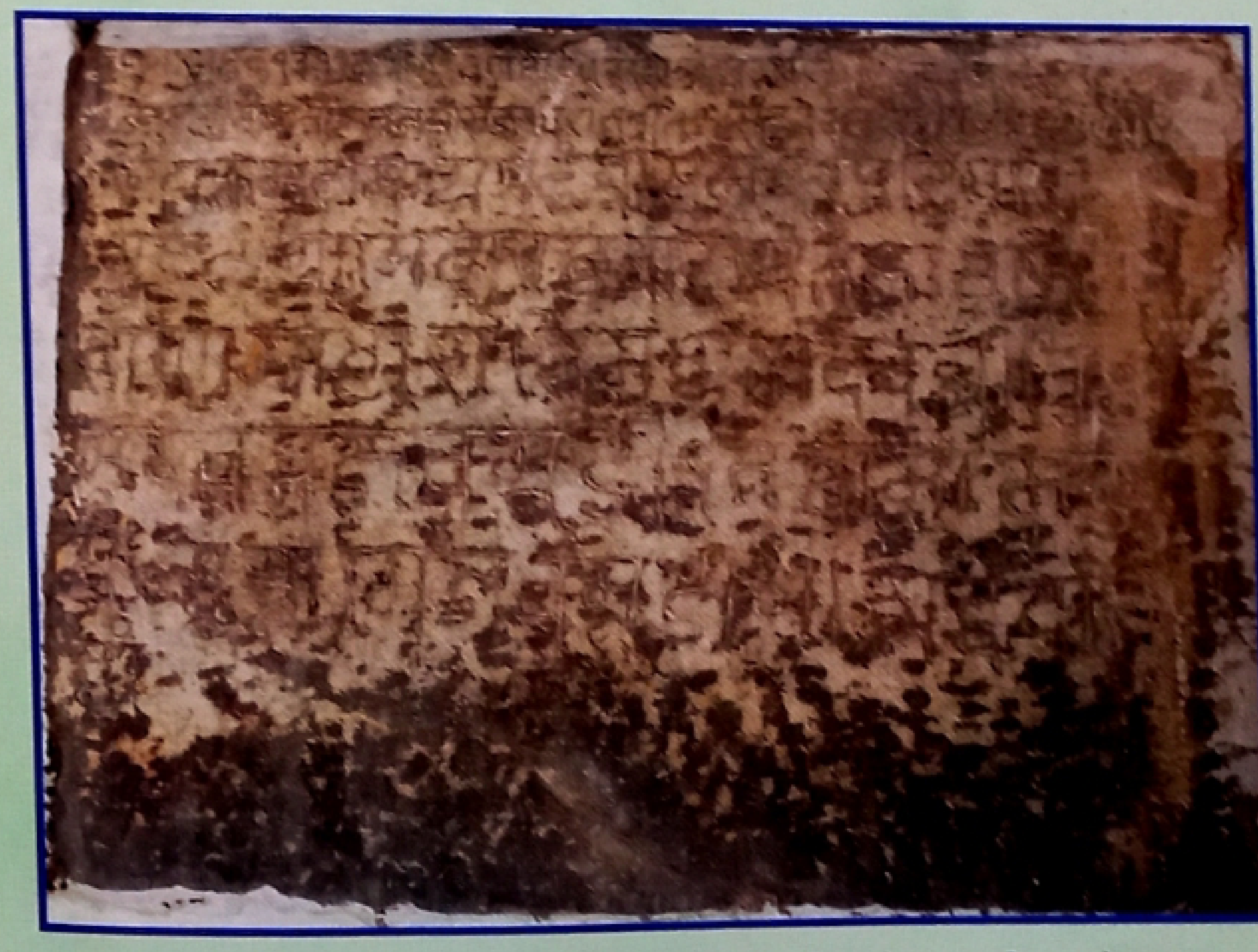
हारीत राशि बाहरी प्रांगण, एकलिंगजी



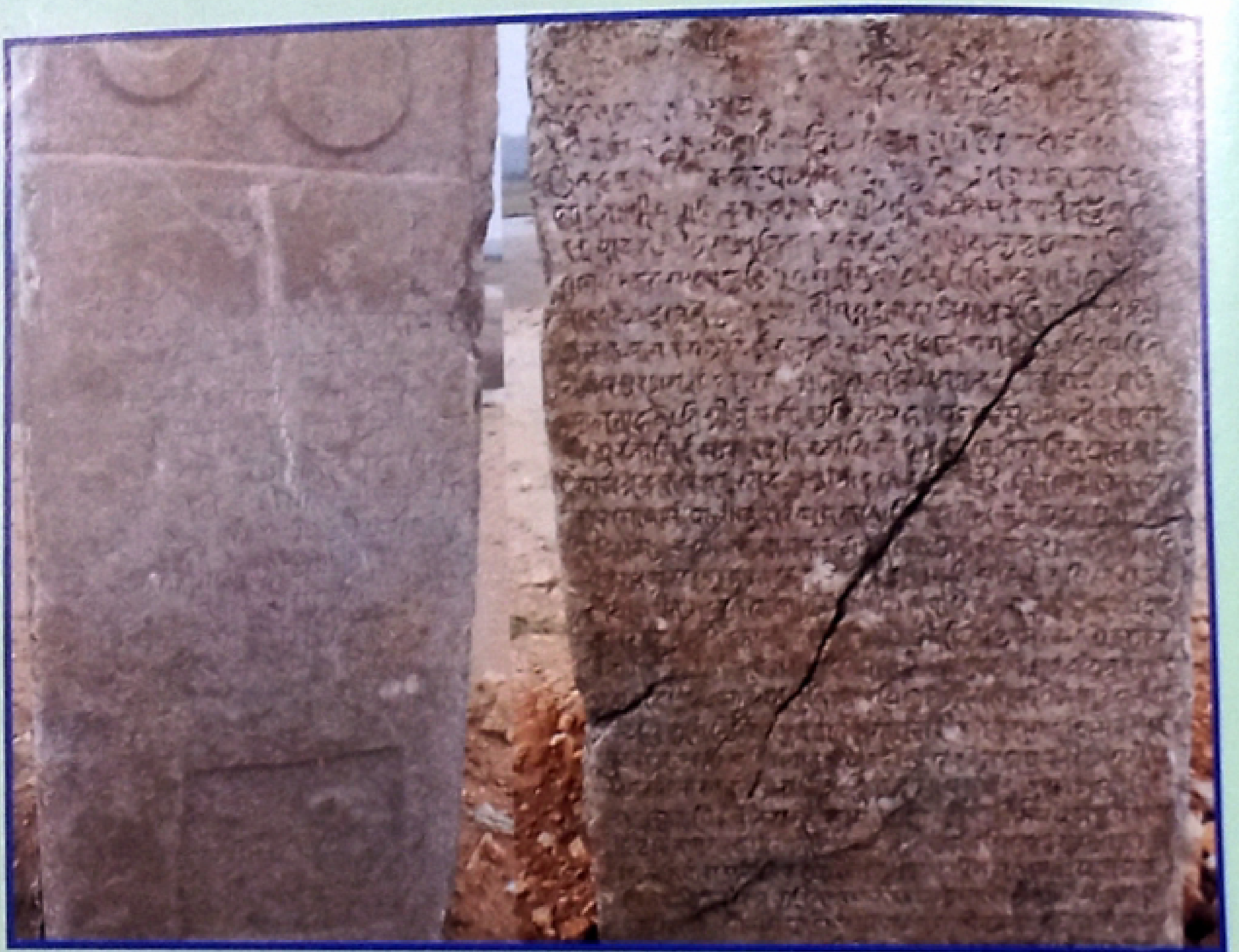
एकलिंगजी मन्दिर का विहंगम दृश्य



घासा तालाब (मागथला) का एक दृश्य, सामने पहाड़ी पर बायण माता मन्दिर



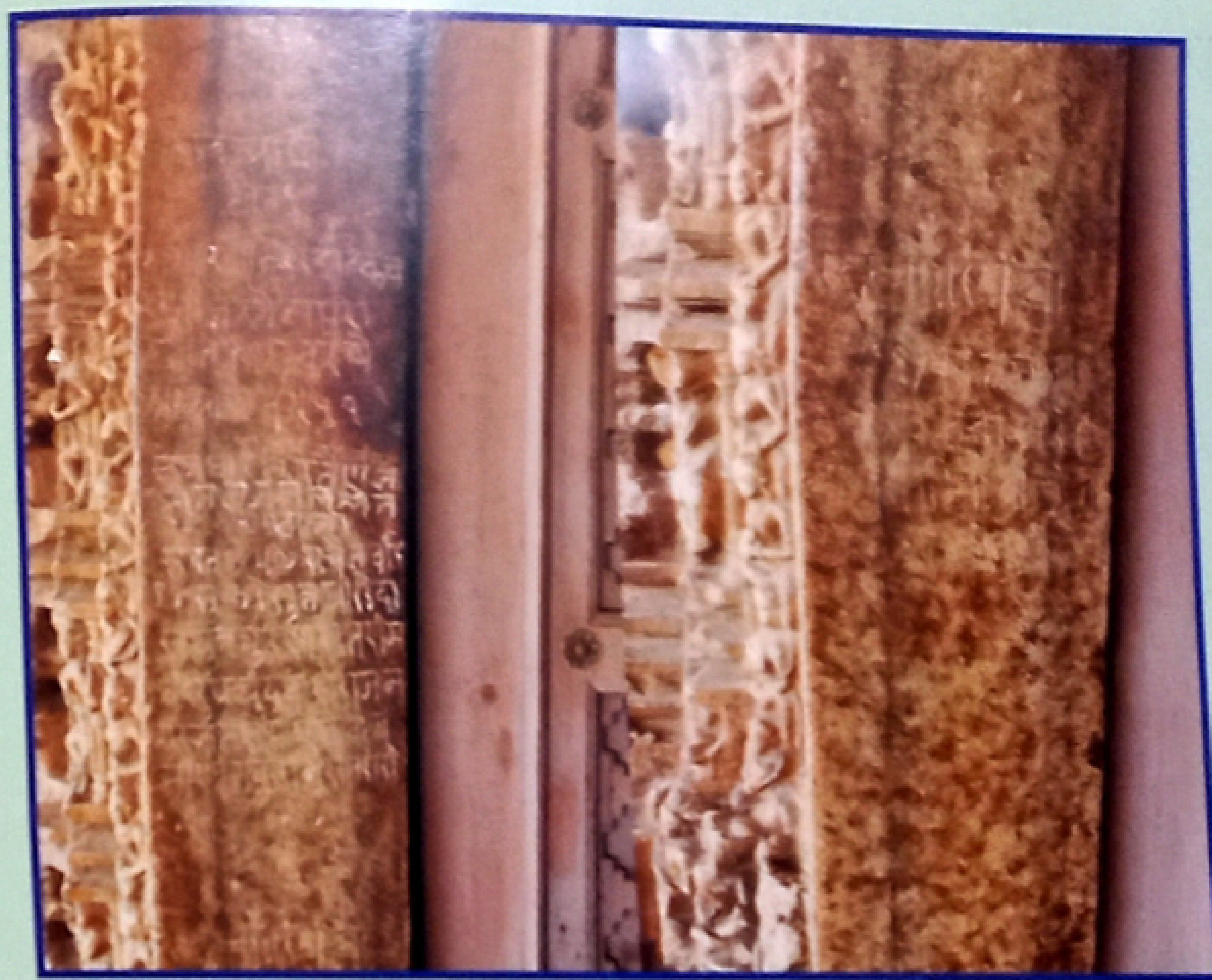
घासा तालाब की पाल के किनारे स्थित मन्दिर में लगा शिलालेख



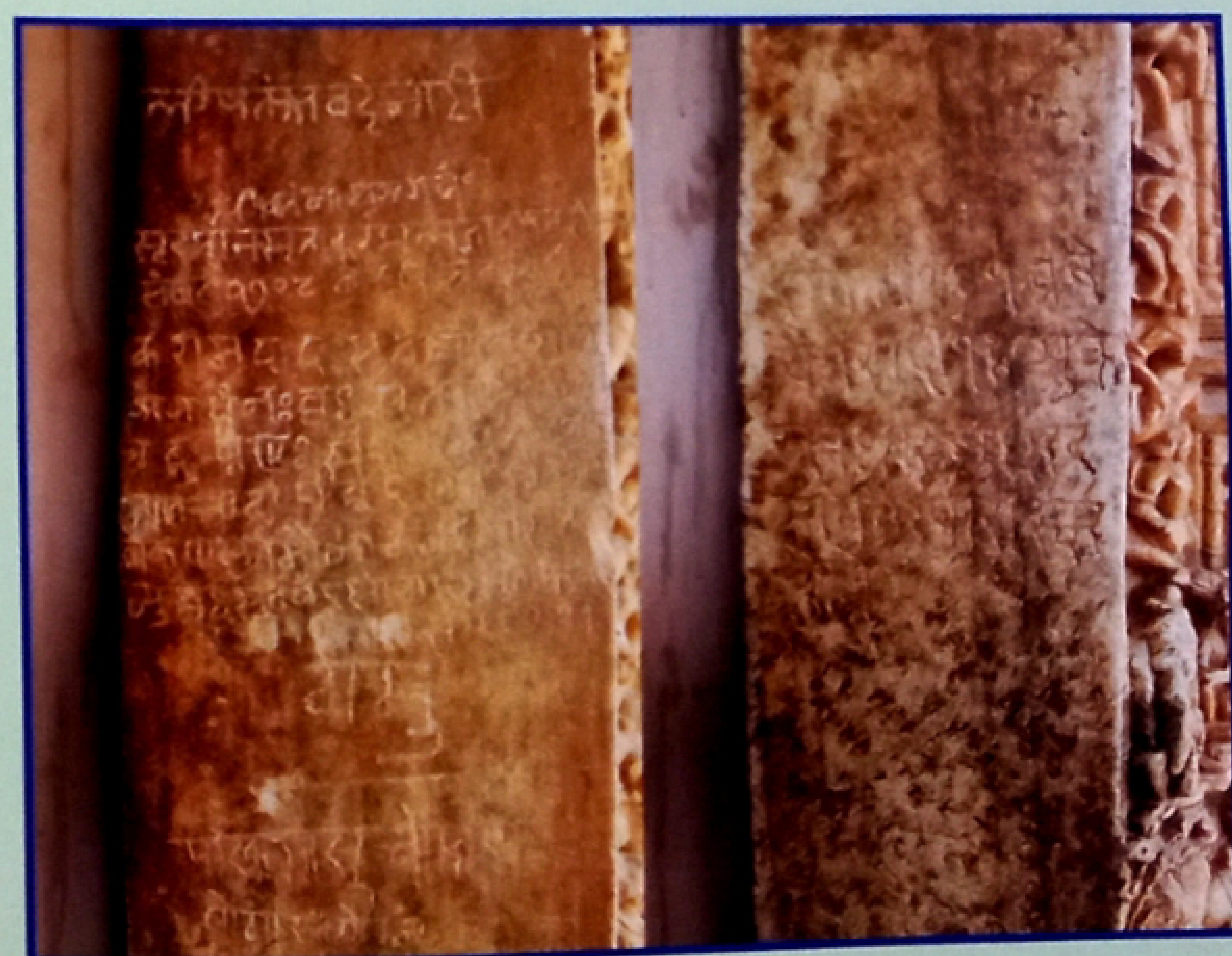
घासा तालाब की पाल पर अवस्थित शिलालेख



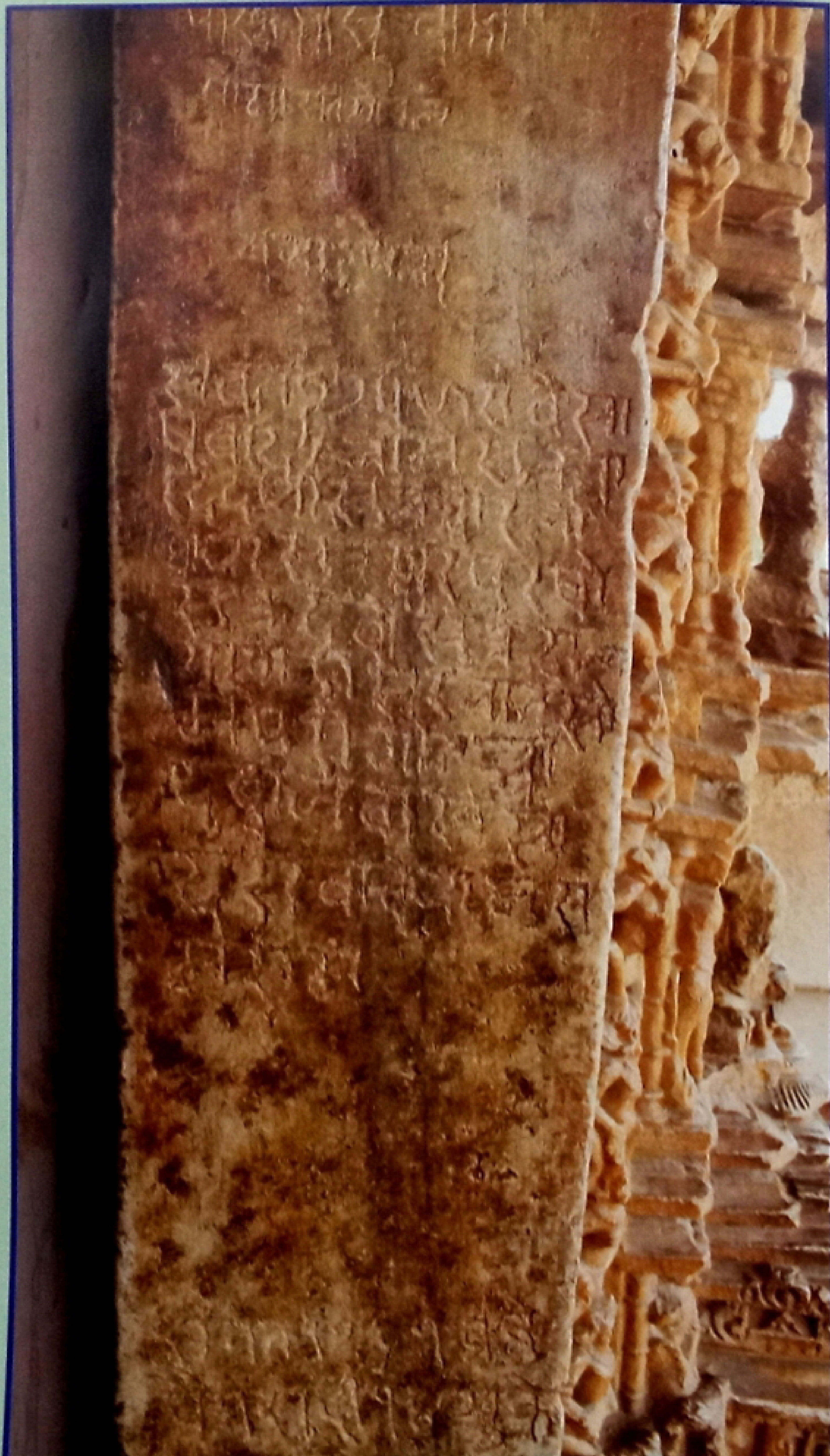
नागदा एकलिंगजी तालाब के किनारे स्थित सहस्रबाहु (सास–बहू) मन्दिर का एक मनोहारी दृश्य



नागदा एकलिंगजी सहस्रबाहु (सास–बहू) मन्दिर प्रांगण



नागदा एकलिंगजी सहस्रबाहु (सास–बहू) मन्दिर प्रांगण में स्थित शिलालेख



नागदा एकलिंगजी सहस्रबाहु (सास–बहू) मन्दिर प्रांगण में स्थित शिलालेख

बापा, हारीत व एकलिंग वरदान से सम्बधित उपर्युक्त प्रसंगों में विविधता है परन्तु बापा का कम उम्र में नागदा के जंगलों में गाये चराना। गायें चराते हारीत राशि का सम्पर्क व बापा को एकलिंग दर्शन और उनकी भक्ति करना। हारीत की कृपा अथवा शिक्षा से बापा का विकास जैसे तथ्यों में समानता है। यों अनायास बापा हारीत सम्पर्क से बापा के जीवन का अभ्युदय का कारण बना। जिससे आम जन में, संघर्ष से श्रेष्ठता की ओर बढ़ने की प्रेरणा आज तक मिलती रही है।

बापा हारीत सम्पर्क इतिहास में चाणक्य चन्द्रगुप्त जैसा था। उस समय भारतीय सीमाओं पर अरब आक्रमण का भय था। नया विनाश का स्वरूप देश को आतंकित किये था। तत्कालीन भारतीय शासकों द्वारा रोकना सम्भव नहीं था। ऐसे समय में युग द्रष्टा हारीत की योग्यता व बापा की विलक्षणता के सुसामंजस्य ने विश्व स्तर पर भारतीयता की पहचान कायम की। हारीत को योग्य व पात्र शिष्य की तलाश थी। बापा की योग्यता की अभिवृद्धि में सुमार्ग दर्शक की आवश्यकता जो बिना देव कृपा से सम्भव न था। जिस प्रकार अनुकूल वातावरण में बीजों का अंकुरण सम्भव है वैसे ही अरावली की पर्वत शृंखलाओं के प्राकृतिक वातावरण में हारीत बापा सम्पर्क से हारीत के लक्षित उद्देश्य की पूर्ति में बापा में क्षमताओं की वृद्धि होती है।

बापा एक चरवाह से ईशभक्त के रूप में अपनी पात्रता हारीत के निर्देशन में प्राप्त करता है। लक्ष्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि एक स्वस्थ बालक में शिक्षक की भाँति हारीत ने प्रथम पाठ मानवीय गुणों के विकास का पढ़ाया। उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों को जीवन में प्राप्त कर लेने पर हारीत ने उसे उन मूल्यों की रक्षार्थ संघर्ष की शक्ति का विकास किया। जो बापा की शारीरिक क्षमता व बौद्धिक विकास के उच्चतम स्तर को प्राप्त होता है। कथाओं से स्पष्ट होता है कि हारीत द्वारा बापा के प्रारम्भिक जीवन में ऐसा विलक्षण ज्ञान दिया की उसकी शारीरिक व बौद्धिक स्थिति आम जन से कई गुना अधिक थी। तथ्य यह भी बताते हैं कि जब बापा में उत्कृष्ट क्षमता प्राप्त होती है तब हारीत उसे समाज में शान्ति व सुरक्षा की व्यवस्था में दिशा देता है। यहीं से बापा अपने चरवाहे के स्वरूप से शासक के रूप में स्थापित होता है।

हारीत द्वारा बापा को बौद्धिक क्षमता का धनी ही नहीं बनाया गया। वह उसे आर्थिक क्षमता में वृद्धि हेतु अर्थव्यवस्था भी उपलब्ध करा अच्छा प्रशासक व

सैनिक गुणों से सम्पन्न कर चित्तौड़ पर अधिकार के साथ मानव विरोधी शक्तियों से संघर्ष को भेजता है। इस प्रकार हारीत के मार्गदर्शन में तैयार 'बापा' मानवीय मूल्यों की रक्षार्थ प्रत्येक संघर्ष में सफल होता रहा और भारतीय मूल्यों से सम्पन्न एक ऐसी व्यवस्था कायम की जो बापा से लगाकर आजादी तक भारतीय इतिहास में अपनी पहचान साम्राज्य विस्तार से नहीं, बल्कि उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों की स्थापना संघर्ष के रूप में सुज्ञात है। बापा व हारीत सम्बन्ध व बापा के शिक्षा प्रशिक्षण की जानकारी में 'श्रीमद्एकलिंगपुराणम्' में बताया कि बापा द्वारा गुरु रूप में हारीत को मानना तथा उससे दीक्षा प्राप्त कर कहता की जीव किस तरह ब्रह्मस्वरूप को प्राप्त करता है ऐसा मुझे ज्ञान प्रदान करना। ऐसे अनुरोध पर हारीत कहता कि बापा तुम मित्र के समान हो तथा भक्तिपूर्ण पूछ रहे हो। अत: तुम्हारे कल्याण के लिए यह सभी ईश्वर को सान्निध्य में रहते कहता हूँ।

यों हारीत द्वारा बापा के प्रति स्नेह प्रकट करना है। साथ ही बापा के व्यक्तित्व के विकास के उपदेश देता है। जिसमें एकलिंग पूजा, धर्म, दर्शन, साधना, योग, यज्ञ आदि की 'विस्तृत' जानकारियाँ हैं। उसमें बताया कि बापा के सिर पर हाथ रखकर हारीत ने एकलिंग जी का स्मरण कर आशीर्वाद दिया कि तुम जो इच्छित विचार करोगे वो एकलिंगजी की कृपा से सफल होगा। ऐसा हारीत द्वारा करने पर बापा ने गुरु की पूजा कर उन्हें प्रसन्न किया। 'राजप्रशस्ति महाकाव्यम्' व 'राणा रासो' के वर्णन में अन्तर केवल इतना है कि 'राणा रासों' में हारीत को गुरु के स्थान पर इष्टदेव के रूप में बताया है। 'खुम्माण रासो' में भी हारीत द्वारा बापा को शिक्षा देना बताया है।[42]

बापा की शिक्षा व्यवस्था में शस्त्र-विद्या, राज्य व्यवस्था, वित्त व्यवस्था के प्रत्यक्ष उदाहरण नहीं है, लेकिन बापा का शौर्य पूर्ण व्यक्तित्व से स्पष्ट होता है कि बापा की शिक्षा व्यवस्था उत्कृष्ट रही होगी जिससे बापा के जीवन में सैनिक, प्रशासनिक, वित्त व्यवस्था की सक्षम व्यवस्था प्राप्त हो सकी। यह हारीत द्वारा बापा का संरक्षण से ही प्राप्त हुआ। बापा की पात्रता व योग्यता को 'खुम्माण रासो' में इस

42. डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', प्रो. भंवर शर्मा, श्रीमद्एकलिंगपुराणम्, एकोनविंशोऽध्याय, श्लोक सं. 38, 39, 47, 65, पृ. 254-258; राजप्रशस्ति महाकाव्यम्, सर्ग तृतीय, श्लोक सं. 8, पृ. 30; डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, राणा रासो, छन्द 51, पृ. 173

प्रकार प्रदर्शित किया कि मेवाड़ राज्य की कुलदेवी बायणमाता द्वारा बापा की परीक्षा लेकर सफल होने पर उसे माला, तलवार, धनुष, तरकस, ढाल, कटार जैसे हथियार उसे योद्धा मानकर बापा को धारण करवाये।[43]

बापा का विवाह सन्तति

बापा का विवाह के सन्दर्भ में ऐतिहासिक काव्यों एवं ग्रन्थों में विवरण है कि 'श्रीमद् एकलिंगपुराणम' में बताया कि बापा रावल के चित्तौड़ प्राप्ति के बाद अपनी जाति में विवाह हुआ। उसने एक पत्नी-व्रत धारण किया। इसी में बापा को विप्र बताया है अत: उसका विवाह ब्राह्मण परिवार में सम्पन्न हुआ। 'अमरकाव्यम्' में लिखा कि – एक समय बापा पीपल के पेड़ तले खड़ा था। तब 26 कन्याएँ वहाँ आती हैं और बापा से कहती हैं कि झूलने के लिये पीपल के पेड़ पर झूला डाल दो तब बापा कहता कि तुम सभी अपने सिर पर पीपल का पत्ता बाँध मेरी परिक्रमा करो तब झूला डालूंगा। ऐसा करने पर बापा ने झूला डाल दिया। वे बापा के हाथ के सहारे झूले पर चढ़कर घर चली जाती हैं।

समय आने पर कन्याओं के परिजनों ने ज्योतिष से पाणिग्रहण संस्कार का समय हेतु पूछा। ज्योतिषी ने लग्न देखकर कहा कि इनका पाणिग्रहण पूर्व में हो चुका है। कन्याओं के परिजनों ने उनसे पूछा तब ज्ञात हुआ कि झूला-झूलने की घटना के रूप में उनका विवाह बापा से हो चुका है। इस पर सभी-परिवारजनों ने नियति का विधान मान चैत्र कृष्णा पंचमी रविवार को 26 ही कन्याओं का विवाह बापा से होना बताया है। लिखा कि इसके बाद बापा उनके भरण पोषण हेतु गायें चराने का कार्य करने लगा। 'मुंहता नैणसी री ख्यात' में विवाह चैत्र विद (कृष्णा) पंचमी, मंगलवार को 140 युवतियों से हुआ लिखा है।

'राजविलास' काव्य में बताया कि – चैत्र शुक्ला तीज के पर्व पर जंगल में गई नागदा नगर की श्रृंगारित बालाओं की बापा ने शेर से रक्षा की। बापा के शौर्य से आकृर्षित उन कन्याओं में से 108 कन्याओं ने बापा के गले में वरमाला डाली। जब उनके परिवारजनों को ज्ञात हुआ तब उन्होंने बापा के साथ उनका विवाह कर दिया। धन-धान्य से पूर्ण दहेज देकर उन्हें बापा को सौंपा। 'खुम्माण रासो' में बापा के

43. डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, खुम्माण रासो, भाग-2, छन्द सं. 44-55, पृ. 64-66

अनेक विवाह होना लिखा है। बताया की चित्रागंद मोरी की 27 पुत्रियों का विवाह आषाढ़ शुक्ल नवमी (भड़ल्या नवमी) को बापा के साथ हुआ। लेकिन चित्रांगद मोरी बापा के समकालीन नहीं था।

'चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा' में बापा के 27 विवाह चित्रांग मोरी की पुत्रियों से होना बताया है। 'सिसोद वंशावली' में बापा के 31 रानियाँ व 1000 खवासणें बताया गया है। मेवाड़ रावल राणा जी री बात में बापा के 140 विवाह होना लिखा है। 'चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा' में बापा के राणियों, खुवासणों और हुरमा (मुसलमान स्त्रियों) की संख्या 371 बताया गया है।[44] बापा की सन्तति के ज्ञान में 'श्रीमद्एकलिंगपुराणम्' में बापा का पुत्र भोज और उसका पुत्र खुम्माण बताया है। 'राजप्रशस्ति', 'अमरकाव्यम्', 'राजविलास', 'राणारासो', 'भीमविलास', 'सिसोद वंशावली', 'रघुवंश नामावली' गीत में बापा का पुत्र खुम्माण बताया है।" चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा' में 104 पुत्र, मेवाड़ रावल राणा जी री बात में बापा के 110 पुत्र, 'खुम्माण रासो' में 52 पुत्रों की जानकारी मिलती है। कर्नल जेम्स टॉड ने बताया 130 पुत्र पश्चिम देशों की पत्नियों से पैदा हुए। 98 हिन्दू स्त्रियों के पुत्र बताया है। रामनाथ रत्नू ने 'राजस्थान का इतिहास में 98 पुत्र बताये। जो सौराष्ट्र मारवाड़ आदि क्षेत्रों में लम्बे समय तक शासक रहे।[45]

यों उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि बापा का विवाह कम उम्र में होना और सन्तति के रूप में परिवार भरा पूरा था। पुत्रों की संख्या के समकालीन स्रोत नहीं होने से परवर्ती स्रोतों में संख्या काल्पनिक लगती है। लेकिन बापा के बाद

44. डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', प्रो. भँवर शर्मा, श्रीमद्एकलिंगपुराणम्, एकोनविंशोऽध्याय:, श्लोक सं. 10-12, पृ. 268; डॉ. देव कोठारी, डॉ. शक्तिकुमार शर्मा, अमरकाव्यम्, सर्ग तृतीय, श्लोक 5-17, पृ. 85-87; डॉ. मोतीलाल मेनारिया, राजविलास, छन्द सं. 158-179, पृ. 17-19; डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, खुम्माण रासो, भाग-2, छन्द सं. 46, 432, 433, पृ. 138, 143; डॉ. मनोहरसिंह राणावत चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा, भाग-2, पृ. 64-66, 67; डॉ. हुकमसिंह भाटी, मेवाड़ रावल राणा जी री बात, पृ. 3; डॉ. हुकमसिंह भाटी, सिसोद वंशावली, पृ. 26-27

45. डॉ. हुकमसिंह भाटी, सिसोद वंशावली, पृ. 26-27; डॉ. हुकमसिंह भाटी, मेवाड़ रावल राणा जी री बात, पृ. 4; डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', प्रो. भँवर शर्मा, श्रीमद्एकलिंगपुराणम्, एकोनविंशोऽध्याय:; श्लोक सं. 10-12, 16-17, पृ. 268-285; राजप्रशस्ति महाकाव्यम्, सर्ग तृतीय श्लोक-20, पृ. 33; अमरकाव्यम्, सर्ग चतुर्थ, श्लोक सं. 1, पृ. 105; राजविलास, द्वितीय विलास, छन्द स. 1, पृ. 26, राणा रासो छन्द सं. 63, पृ. 180-181, भीमविलास, छन्द सं. 33, पृ. 6, खुम्माण रासो, भाग-2, छन्द सं. 503-04, पृ. 151; चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा, भाग 1, पृ. 66-67, प्राचीन राजस्थानी गीत, भाग-4, छन्द सं. 22, पृ. 125

उसका उत्तराधिकारी के रूप में खुम्माण को पं. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा व रामवल्लभ सोमानी ने भी अपनी पुस्तक में बताया है। 'राज रत्नाकर महाकाव्यम्' के द्वितीय सर्ग के श्लोक 8 में बापा के पुत्र का नाम कालभोज पाया गया है।

राज्याभिषेक व चित्तौड़ विजय

बापा के सामान्य से राज्य अधिकारी बनने की प्रक्रिया के स्रोतों के अध्ययन की जानकारियों में :- 'श्रीमद्एकलिङ्गपुराणम्' में पाते हैं कि – बापा रावल ने हारीत राशि के सुझाव पर एकलिंग का विधि पूर्वक पूजन किया। जिस पर वो प्रकट हो बापा को कहा तुम चित्तौड़ जाओ और हारीत को स्वर्गलोक जाने की आज्ञा दो इसके बाद बापा चित्तौड़ गये वहाँ निवास करने व पुत्रादि का वर्णन है।

'श्रीमद्एकलिङ्गमाहात्म्यम्' 'भिन्न पाठ' में लिखा कि – पुराने कवियों ने कहा है कि 810संवत्सर में एकलिंग से वर प्राप्त कर बापा चित्तौड़ का शासक बना। एकलिंग की कृपा से राज्यलक्ष्मी प्राप्त कर बापा ने मेदपाट वसुधा का पालन किया। 'राज्यप्रशस्ति महाकाव्यम्' में वर्णन है कि नागह्रदपुर (नागदा) में रहकर बापा ने एकलिंग की आराधना की, तब शिव ने वरदान दिया कि तुम चित्तौड़ के स्वामी बनोंगे। चित्तौड़ सदा तुम्हारे वंशजों के अधिकार में रहेगा। तुम्हारी संतति अखण्ड रहेगी, ऐसे कई वरदान प्राप्त कर 191 वें वर्ष के माघ माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को एकलिंग व हारीत के प्रसाद से शासक बना।

उस समय बापा 15 वर्ष का था। एकलिंग ने प्रसन्न हो हारीत को सोने का 50 पल का कड़ा दिया। उसे हारीत ने बापा को दे दिया। तब बापा ने मनुराज मोरी (मान मोरी) को परास्त कर चित्तौड़ में राज्य करने लगा तथा बापा ने 'रावल' पदवी का सम्बोधन प्राप्त किया।

'अमरकाव्यम्' में लिखा कि – माघ शुक्ला सप्तमी सं. 191 में नागद्रह (नागदा) में रहने वाले बापा हारीत के दर्शन कर पन्द्रह वर्ष तक उनकी सेवा की। इस पर खुश होकर हारीत ने शिवपूजा का मार्ग तथा तपस्या की विधि बताई। उसी अनुसार उसने शिव आराधना की तब हारीत ने प्रसन्न हो बापा से कहा, "मैं आज यहाँ से सशरीर एक अद्वितीय आभा वाले विमान से कैलाश पर्वत की ओर जाऊँगा।" यह सुनकर चिन्तित बापा कुछ समय के लिये किसी कार्य से वहाँ से चला गया। विमान अमृत कुण्ड के पास आया। बापा के पुनः आने पर हारीत ने

विमान से बापा का हाथ पकड़ बापा को राज्य भोगने योग्य समझकर कहा कि – पुत्र बापा! जाओ, राज्य करो। बापा चिन्ता में पड़ गया। तब हारीत ने पुनः कहा–चिन्ता छोड़ो। शिवजी की कृपा से तुम प्रथम भावी राजा हो। यह कहकर हारीत ने पैरों में पहनने का कड़ा जो शिव से प्राप्त किया उसे बापा को दे दिया और कहा–सम्पूर्ण भूमण्डल में मेवाड़ पर स्थिर शासन स्थापित करने वाले शासक के रूप में विख्यात होओ, चित्रकूट के स्वामी! तुम्हारी कीर्ति एवं संप्रति पृथ्वी पर फैले। तुम्हारे पुत्र, पौत्र आदि मेवाड़ पर निरन्तर शासन करे। इसे 'पादकटक' के प्रभाव से तुम्हारे वंशजों के चरणतल से राज्य कभी नहीं जायेगा। इसके धारण करने से तुम पुराण पुरुष बन जाओगे। तुम्हारे घर में लक्ष्मी का राज व हमारा निवास रहे एवं तुम्हारे शरीर में काम की समता रहे।

अमृत कुण्ड के पास बापा को हारीत ने विमान से उतारा और हारीत ने अपने मुख से बापां को पान दिया और कहा इसे ग्रहण कर लो, किन्तु विमान की गति से पान मुँह में नहीं आकर पैरों पर गिर गया। यह देखकर हारीत ने कहा यदि यह पान मुँह में ले लिया होता तो तुम पृथ्वी पर सार्वभौम सम्राट बनते, लेकिन यह पैरों पर गिरा है, इस कारण तुम्हारे वंशजों का राज्य कभी भंग नहीं होगा। बापा को 56 करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ देकर हारीत विमान से उड़ गया। बापा ने युद्ध कर मौर्य जाति के शासक मनुराज (मोरी) को मारकर गिरी दुर्ग चित्रकूट का राज्य वर्ष 224 में 48 वर्ष की आयु में प्राप्त किया यों अमरकाव्यम् में वर्णन है।

'राजरत्नाकर महाकाव्य' में महाकवि सदाशिव ने लिखा कि – विक्रमादित्य के समय से 191 वें वर्ष में माघ मास के शुक्ल पक्ष में एकलिंग के चरणों में प्रणव बापा नामक राजा ने पृथ्वी पर शासन किया। 'राजविलास' में मान कवि ने लिखा कि बापा द्वारा हारीत की सेवा कर उसे प्रसन्न करना। एक दिन प्रातः काल उसे अपने पास बुलाना, हारीत के आकाश मार्ग से गमन करते समय बापा को अपना मुख खोलने को कहना हारीत द्वारा पीक का गिराना, बापा ने उसे उच्छिष्ट समझकर अपना मुँह फेर लेना। वह पीक उसके पैरों पर गिरा। तब हारीत ने बापा को कहा कि तुम्हारे पैरों के नीचे की भूमि पर तुम्हारा राज्य होगा। इसके बाद बापा को स्वप्न में हारीत राशि के दर्शन होना और चित्तौड़ का अधिपति होने का वरदान देना एवं चित्रांगद मोरी से चित्तौड़ लेने का उल्लेख किया है।

'मुंहता नैणसी री ख्यात' में हारीत राशि द्वारा बापा को चित्तौड़ का राज्य देने के सन्दर्भ में लगभग उन्हीं प्रसंगों का उल्लेख किया है। केवल दो बातों का अन्तर है। प्रथम तो हारीत ने बापा को बाँह पकड़कर ऊँचा किया तो बापा का शरीर दस हाथ लम्बा हो गया। दूसरी बात कि हारीत राशि बापा से कहता कि अमुक स्थान पर 56 करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ गड़ी हुई हैं। उन्हें ले लेना और उससे सेना एकत्रित कर चित्तौड़ पर मान मोरी को हटाकर कब्जा करना। बापा ने ऐसा ही किया। यों ख्यात में हारीत के उपदेश एवं आर्थिक सहयोग से बापा को चित्तौड़ का राज्य प्राप्त करने की जानकारी है।

'राणा रासो' में दयालदास बताता कि जब ताम्बूल वीटिका (पान का बीड़ा) मुख में नहीं गिर कर पाँव पर आकर गिरा। यह देखकर बापा भयभीत हुआ। उसने सोचा कि हारीत की 12 वर्ष की सेवा व्यर्थ चली गई। बापा को यों दुखी देख हारीत हँसे और कहा तुम झोली फैलाओ और आशीर्वाद प्राप्त करो। तब हारीत ने कहा कि तुम्हारे अधिकार से मेदपाट का राज्य कोई छीन न सकेगा। लोग तुम्हें 'रावल' सम्बोधन से सम्मानित करेंगे। ऐसा कहकर हारीत आकाश में उड़ गया। बापा ने तलवार पकड़ी और चारों दिशाओं में दौड़ने लगा। मान मोरी को मारकर उसने मोरियों का संहार किया और चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।

'खुम्माण रासो' में दलपति विजय ने 372 छन्दों में विस्तार से वर्णन किया है। उनमें बताया कि हारीत राशि से वरदान प्राप्ति पर बापा चित्तौड़ की ओर गया। वहाँ चित्र मोरी की सभा में गया। चित्र मोरी ने एक लाख रुपये दैनिक देकर अपना सामन्त बनाया। एक बार द्रोणगिरी के बलशाली दैत्य ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। चित्तौड़ के सामन्त बापा से द्वेष भाव रखते थे। अतः उस दैत्य से लड़ने से मना कर दिया। इस पर चित्र मोरी ने बापा को युद्ध हेतु भेजा। तब सामन्त भी लज्जित हो बापा के साथ हो गये। भयंकर युद्ध में दुर्दान्त दैत्य टिक नहीं सका वह पराजित हुआ इस युद्ध में कई देवियों ने बापा को सहयोग किया। यह देखकर अन्य यवनों ने भयभीत हो बापा की अधीनता स्वीकार की। तब बापा ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर अपना अधिकार किया और चित्र मोरी की 27 पुत्रियों के साथ विवाह किया। यों 16 वर्ष की आयु में चित्तौड़ के राज्य सिंहासन पर संवत् 491 वैशाख शुक्ला पंचमी गुरुवार पुष्य नक्षत्र में बैठा। 'खुम्माण रासो' में बापा का चित्तौड़ पर अधिकार का विस्तार से वर्णन है।

युद्ध में शत्रु व बापा की सेना, हाथी, घोड़ों की संख्या तथा बापा की वीरता, युद्ध कौशल आदि का विस्तार से वर्णन दिया है।

'चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा' में वर्णन है कि हारीत राशि द्वारा वरदान प्राप्त करने के बाद बापा ने मोरियों की 27 बेटियों से विवाह किया और चतरंग राजा को मारकर 191 विक्रम संवत् की माघ विद चवदस, रविवार रोहणी नक्षत्र के दिन चित्तौड़ का राज्य प्राप्त किया। 'मेवाड़ रावल राणा जी री बात' में बताया कि हारीत के वरदान से बापा ने चित्तौड़ प्राप्त किया। चित्तौड़ पर मान मोरी 29 लाख असवारों की सेना के साथ था। बापा रावल दस हजार असवारों से देलवाड़ा से चढ़ाई कर चित्रकूट का युद्ध विजयी करता है और इस पर अपना अधिकार कर लेता है। 'सिसोद वंशावली' में चित्रकोट विजय कर 140 कन्याओं से विवाह और वीरवरणी महादेव पर गुहाराक्षस रहता था उसे आंवल्या पर्वत पर गुहा में से मार बत्तीस मण की तलवार बापा ने प्राप्त की। उसके बाद चित्तौड़ विजय कर अन्य प्रदेशों की विजय पर चल पड़ा।

'भीम विलास' के किशना आढ़ा ने लिखा कि हारीत के वरदान से 29 लाख व्यक्तियों को तलवार से मारकर मोरी के पास से चित्तौड़ राज्य लिया। 'इतिहास राजस्थान' में रामनाथ रत्नू ने बापा को मान मोरी का भानजा बताया। मान मोरी के कोई सन्तान न होने पर अरबों द्वारा चित्तौड़ पर आक्रमण होने पर बापा ने उनका मुकाबला कर भगाया तब मान मोरी ने प्रसन्न हो बापा को चित्तौड़ का राज्य सौंपा।[46]

यों बापा रावल के चित्तौड़ पर अधिकार के वर्णन में चित्तौड़ राज्य प्राप्ति में हारीत राशि का वरदान और आर्थिक सहयोग प्रमुख था उसको सभी स्रोतों में बताया है। वापा ने चित्तौड़ कैसे अपने अधिकार में लिया यह विवरण सभी ने अलग-अलग दिया है जो वास्तविकता से कितना नजदीक है इस पर शोध की आवश्यकता है। वापा के राज्य प्राप्ति का समय उपर्युक्त अधिकांश सन्दर्भों में वि.सं. 191 माघ मास बताया है। माघ माह की तिथि सभी में एक नहीं है, किन्तु महीना माघ सभी ने माना है। 'खुम्माण रासो' में राज्य प्राप्ति का वि.सं. 491, वैशाख शुक्ला, पंचमी, गुरुवार और पुष्य नक्षत्र बताया है। यों चित्तौड़ विजय की संवत् तिथि पर शोध की आवश्यकता है। बापा रावल के समकालीन स्रोत नहीं होने से उसकी चित्तौड़ विजय या उसके राज्य काल की निश्चित जानकारी निर्धारित करना कठिन है। ऊपर वर्णित स्रोतों में या तो संवत् तिथि का उल्लेख नहीं है अगर उल्लेख है तो उनमें एकरूपता नहीं है।

46. डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' व प्रो. भँवर शर्मा, श्रीमद्एकलिंगपुराणम्, स्कोन विशोंऽध्याय: श्लोक सं. 107, पृ. 265; प्रेमलता शर्मा, श्रीमदेकलिंग माहात्म्यम्, पृ. 172; राजप्रशस्ति महाकाव्यम, तृतीय सर्ग, श्लोक सं. 8-19, पृ. 30-33; अमरकाव्यम्, तृतीय सर्ग, श्लोक सं. 29-64 पृ.90-99; राजविलास, पहला विलास, छन्द सं. 145-195 पृ. 15-20; मुंहता नैणसी री ख्यात, पृ. 3; राणा रासो छन्द सं. 55-60 पृ. 176-178, खुम्माण रासो, भाग-2, पृ. 67-138; चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा, भाग-1, पृ. 64; मेवाड़ रावल राणा जी री बात, पृ. 3, सिसोद वंशावली, पृ. 24-27, भीम विलास, पृ. 5, रामनाथ रत्नू, इतिहास राजस्थान, पृ. 24

मेवाड़ के शासक नरवाहन के समय की 971 ई. की प्रशस्ति एकलिंगजी मंदिर में लकुलीश मन्दिर में उत्कीर्ण है। उसके पाँचवें श्लोक में बापा का जिक्र है। इससे ज्ञात होता है कि 971 ई. से पूर्व मेवाड़ का बापा नामक शासक हुआ। चित्तौड़ से 7 किलोमीटर उत्तर दिशा में पूठोली गाँव के तालाब पर 713 ई. का मान मोरी का शिलालेख था। जिसे कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक 'एनल्स एण्ड एन्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान' में प्रकाशित करवाया था। अत: प्रमाणित होता है कि 713 ई. के बाद ही चित्तौड़ पर बापा का अधिकार हुआ। टॉड का मत है कि इसे 727 ई. में मौर्यों से बापा ने चित्तौड़ लिया। इसके विपरीत मेवाड़ के अन्य स्रोतों में मुख्यत: संवत् 191 मिलता है। स्रोतों में तिथियों में अन्तर मिलता है, लेकिन अधिकाशंत: संवत् 191 ही मिलता है। यहाँ जनश्रुति भी है कि बापा ने 'संवत एके एकाणवै' अर्थात् 191 में चित्तौड़ का राज्य प्राप्त हुआ। मेवाड़ के सुप्रसिद्ध इतिहासकार कविराजा श्यामलदास ने भी 'बड़वों की ख्यातों' के आधार पर 'वीर विनोद' में भी 191 संवत् ही माना है। गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने 'एकलिंङ्गमाहात्म्यम्' पुस्तक के आधार पर बापा का समय वि.सं. 810 दिया है। लेकिन हँसपद देकर हाशिये पर किसी ने 'तत: शशिनंद चंद्र सं. 191 वर्ष' लिखा है।

इस बारे में जेम्स टॉड ने कल्पना की कि 523 ई. में वल्लभी के नाश होने पर वहाँ का राजवंश मेवाड़ में आया। उस समय से बापा के जन्म तक 191 वर्ष होना चाहिये। परन्तु टॉड का मत विश्वास योग्य नहीं है। वल्लभी के नाश होने पर वहाँ का राजवंश सीधा मेवाड़ नहीं आया। साथ ही वल्लभी का नाश 523 ई. में न होकर 769 ई. में हुआ। यह 191 की मान्यता गलत है।

गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने 191 के बारे में कल्पना की कि प्राचीन स्रोतों में १ व ७ अंकों में समानता होने से प्राचीन स्रोत में पढ़े ७९१ को १९१ पढ़ लिया गया। इसके लिये सामोली शिलालेख के अंकों के उदाहरण से स्पष्ट भी किया कि शिलालेख में ७ का अंक वर्तमान के १ अंक के समान है। जो प्राचीन लिपि के ज्ञान नहीं रखने वाले व्यक्ति ७ अंक को १ का अंक पढ़ेगा। ओझा जी की कल्पना में ऐसी भूलें होती रही है। यों ओझा के मत के अनुसार १९१ के स्थान पर ७९१ संवत् होना है।

टॉड के अनुसार बापा का जन्म 769 (712-13 ई.) माना है तथा 15 वर्ष की आयु व वि.सं. 769+15 = 784 में चित्तौड़ पर अधिकार होना माना है। यों बापा का जन्म वि.सं. 769 को मान लें और चित्तौड़ विजय के समय बापा की आयु 15 वर्ष के स्थान पर 22 वर्ष को उम्र मानें तो वि.सं. 769 + 22 = 791 में चित्तौड़ पर बापा के अधिकार का समय तय होता है। तब महाराणा कुम्भाकालीन 'एकलिङ्ग -महात्म्यम्' में बापा का चित्तौड़ अधिकार का समय वि.सं. 810 का उल्लेख है जो चित्तौड़ पर अधिकार का न होकर बापा का संन्यास लेने के सन्दर्भ में है। 'खुम्माण रासो' में चित्तौड़ पर अधिकार का संवत् 491 है इसका समर्थन अन्य स्रोत से नहीं होता है। यों ऐतिहासिक काव्यों में वर्णित वि.सं. 191 है उसे ओझा के मतानुसार 791 मान ले तो सभी सन्दर्भों में सही बैठ जाता है। इस प्रकार बापा का राज्याभिषेक संवत् वि.सं. 791 मानना उचित होगा।[47]

बापा के राज्याभिषेक की तिथियों में भिन्नता है, लेकिन मास में माघ मास का उल्लेख अधिकांशत: हुआ है। यों बापा का राज्याभिषेक का समय वि.सं. 791 के माघ माह में हुआ। वर्ष तिथि व वार के शोध आवश्यक हैं। यों बापा 22 वर्ष की आयु में वि.सं. 791 के माघ माह में चित्तौड़ का स्वामी बना की मान्यता विश्वास योग्य है।

बापा की सैन्य व प्रशासन व्यवस्था

बापा को हारीत के आशीर्वाद के बाद बापा 10 हजार असवारों की सेना के

47. कर्नल जेम्स टॉड- एनल्स एण्ड एन्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान वोल्यूम-1, पृ. 269, वोल्यूम-2, पृ. 919-22; श्यामलदास, वीर विनोद भाग-1, पृ. 234; गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग-1, पृ. 109,110

साथ चित्तौड़ हेतु रवाना होता है। मेवाड़ की ख्यातों में उस सेना की संख्या 12 लाख 90 हजार बताई है। ख्यातकार ने यह संख्या बढ़ा-चढ़ा कर लिखी हो, लेकिन यह सत्य है कि बापा के पास शक्तिशाली सेना थी। इसे व्यवस्थित एवं संगठित रखने की निश्चित रूप से सुव्यवस्था थी जो कई सैन्य अधिकारियों के नियन्त्रण में थी।

बापा की सेना संख्या का 'खुम्माण रासो' में विवरण अतिशयोक्तिपूर्ण है। परन्तु यह सच है कि बापा द्वारा चित्तौड़ राज्य का विस्तार किया गया। साथ ही भारतीय सीमा पर तत्कालीन अरब खलीफाओं के खूनी हमलों एवं लूटपाट का बापा ने मुकाबला किया। जिससे बापा की सैन्य क्षमता एवं उचित व्यवस्था का पता चलता है। इससे स्पष्ट होता है कि बापा की प्रशिक्षित कुशल सेना थी। सेना में पैदल, घुड़सवार, व हाथियों की संख्या का समसामयिक विवरण प्राप्त नहीं है, परन्तु बापा ने तत्कालीन चुनौतियों का जिस प्रकार मुकाबला किया। जिससे मेवाड़ में सुदृढ़ शासन व्यवस्था की नींव पड़ी। वो बापा की पर्याप्त, कुशल और शक्तिशाली सेना के साथ बापा का दूरदर्शी प्रतिभाशाली सैन्य नेतृत्व से सम्भव हो सका।

बापा को हारीत के मार्गदर्शन में उचित सैन्य प्रशिक्षण व सैन्य व्यवस्था तैयार हो गयी थी तभी तो राज्य विस्तार का उद्देश्य सफल हुआ। जो राज्य विस्तार के साथ-साथ बापा द्वारा इसका विस्तार कर सुशासन व स्थायित्व प्रदान किया। बापा के सामने अरब खलीफाओं का संघर्ष था। अत: बापा ने समय की माँग के साथ-साथ अपनी सैन्य क्षमता का विस्तार व नवीन सुसज्जित सेना को प्राथमिकता प्रदान की।[48]

बापा रावल ने चित्तौड़ पर विजय प्राप्ति के बाद अपने नवस्थापित राज्य को स्थायित्व दिया और राज्य सीमाओं का विस्तार किया। जिसमें तत्कालीन अरब खलीफाओं के आक्रमणों का मुकाबला किया जो सुदृढ़, प्रभावी एवं कुशल प्रशासनिक व्यवस्थाओं का परिणाम था। हालांकि समसामयिक स्रोत में कोई लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है, परन्तु कुछ आंशिक तथ्यों से ज्ञात होता है कि बापा रावल इस दृष्टि से काफी जागरुक थे।

'खुम्माण रासो' के अनुसार बापा रावल ने मतकेंवास को प्रधानमंत्री नियुक्त किया। बापा के राज्य विस्तार के तथ्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि मेतकेंवास

48. कुं. देवीसिंह मंडावा, भारत और भारतीयता के रक्षक, पृ. 19, 20

एक दूरदर्शी, प्रभावी, विश्वसनीय सलाहकार था। प्रजा व शासक के मध्य समन्वयात्मक व्यवस्था और लोक कल्याणकारी कार्यों को करने वाली उसकी कुशल टीम थी। जिसके कारण ही बापा का साम्राज्य मध्य एशिया तक फैल सका। 'खुम्माण रासो' में लिखा की बापा जब राजसिंहासन पर बैठता तो सभी योद्धा उसकी सेवा में रहते थे जिससे वह अपने तेज से राज्य विस्तार में सफल हुआ। इसी प्रकार लिखा कि बापा ने नागदा के नागिल ब्राह्मण को गुरु बनाकर राजद्वार का पुरोहित बनाया। सुन्दरदास को सखियों का ब्राह्मण अर्थात् रनिवास का प्रभारी बनाया। बापा की शक्ति उसके सामन्तों का दल था जिन्हें वह उचित सम्मान देकर प्रोत्साहित करता था। बापा इन सामन्तों का सैन्य व्यवस्था के साथ-साथ, न्याय, प्रशासन, वित्त व देवस्थान व्यवस्था के प्रमुख अंग के रूप सजग बनाये रखता था।[49]

बापा का राज्य विस्तार

बापा एक ग्वाला से शासक के रूप में चित्तौड़ पर कायम हुआ तब चित्तौड़ की सीमाएँ मौर्यों, परमारों, प्रतिहारों और चौहान राज्य से लगी थी। इन सभी पर अरब आक्रमणों के कारण बाह्य सुरक्षा भी अच्छी नहीं थी। ऐसी विपरित परिस्थिति में बापा ने अपनी सीमाओं का विस्तार कर एक विशाल साम्राज्य का रूप दिया जो उसकी कुशल सैन्य नेतृत्व व उच्च स्तरीय प्रशासन व्यवस्था के बल पर सम्भव हुआ।

'अमरकाव्यम्' में बताया कि - बापा ने मालवा, गुजरात, आबू, सौराष्ट्र, नागौर, मारवाड़ (मरुस्थल) और सिन्धु तटीय क्षेत्रों को बलपूर्वक जीत उन्हें अपने राज्य में मिलाया। बापा ने गंगा सागर संगम (पूर्व में), सेतुबन्ध रामेश्वर (दक्षिण में), द्वारिका, सिन्धु (उत्तर-पश्चिम में), हिन्दूकुश एवं गजनी (उत्तर में) तथा श्रीनगर (कश्मीर) के नरेशों को जीत राज्य की सीमाओं का विस्तार किया।

'राजविलास' में वर्णन है कि बापा ने कच्छ पर आक्रमण कर अपने पूर्वजों की राजधानी वल्हिका (वल्लभी) को जीता। साथ ही आठ-दस अन्य प्रदेशों को जीत अपनी राज्य सीमा में मिलाया। 'राणा रासो' में बताया कि हारीत राशि के आशीर्वाद के बाद बापा ने तलवार पकड़ी और दशों दिशाओं में विजय प्राप्ति के लिये दौड़ने लगा। सीमा पार के शत्रुओं को मारकर उनके राज्यों पर अपना

49. डॉ. व्रजमोहन जावलिया, खुम्माण रासो, भाग-2, छन्द सं. 484, 485, 489, 491, पृ. सं. 147, 148

अधिकार कर लिया। 'खुम्माण रासो' में बापा की विजय यात्रा के रूप में बताया कि - मगध, अंग, पांचाल, सिन्धु, सौवीर, सपादलक्ष, बंग, कलिंग, विराट, काशी, साकेत, कुरुक्षेत्र, वत्सदेश, नौहर, मध्यप्रदेश, गुर्जर, कुशावर्त, नागक्षेत्र, वत्सदेश, विदेह, नवद्वीप, मलय से लगाकर शोरसेन (मथुरा मण्डल) आदि प्रदेशों को जीत अपने अधीन किया। 'भीम विलास' में अतिशयोक्तिपूर्ण विस्तार से वर्णन में पूर्व, पश्चिम, उत्तर दक्षिण चारों दिशाओं के प्रदेशों पर बापा की विजय के नामों का वर्णन के साथ नेपाल, लंका व खुरासान की विजय का वर्णन है। 'चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा' में लिखा कि बापा ने गजनी पर आक्रमण कर वहाँ के बादशाह अलाईरम को परास्त किया। अपने चतुर्थ पुत्र मोहणसी को नेपाल की गद्दी पर बैठाया। बापा ने 319 मुस्लिम औरतों से विवाह किया। इनसे जो पुत्र हुए उनमें बड़े पुत्र जमरदीन को काबुल, दूसरे पुत्र यहमदनूर को तुर्कीस्तान तथा तीसरे पुत्र तीमरबेग को ईरान का राज्य दिया। कुछ पुत्रों को नेपाल की ओर भेजा।

कर्नल जेम्स टॉड ने लिखा कि बापा का गजनी जाना तथा वहाँ के बादशाह सलीम को गद्दी से उतारकर सूर्यवंशी सामन्त को वहाँ पर स्थापित किया। पाटनामा में गजनी के शासक का नाम 'अलाईरम' बताया है जबकि टॉड 'सलीम' नाम बता रहा है। टॉड लिखता कि बापा अपने अन्तिम दिनों में खुरासान चला गया जिससे ज्ञात होता है कि खुरासान भी बापा के अधिकार क्षेत्र में था। रामनाथ रत्नू ने इतिहास राजस्थान में लिखा कि बापा छब्बीस वर्ष तक चित्तौड़ पर राज्य करने के बाद वि.सं. 810 में खुरासान चला गया। बापा ने कंधार, कश्मीर, ईरान, ईराक तथा तूरान के शासकों को परास्त कर उनकी पुत्रियों से विवाह किया।

पश्चिमी राजपूताने की सीमा पर अरब आक्रमण के सन्दर्भ में आस्ट्रेलियन लेखक इयान ऑस्टिले ने लिखा कि बापा रावल ने परमारों, जैसलमेर तथा अजमेर के शासकों के सहयोग से इन आक्रमणकारियों को सिन्ध के उस पार खदेड़ लाहौर को मुक्त कराया। परशिया पर अधिकार कर वहाँ की राजकुमारियों से विवह किया और दक्षिण की ओर बढ़ कर वल्लभीपुर पर पुनः अधिकार करके अपने पूर्वजों के राज्य को पुनः स्थापित किया। उसने आगे लिखा कि यदि बापा रावल अरब आक्रमणकारियों को अपने बाहुबल से भारत से बाहर नहीं खदेड़ता तो पूरा भारत मुस्लिम राष्ट्र में परिवर्तित होता। यों तत्कालीन समय में मुस्लिम प्रभाव को भारत में रोकने में बापा का महत्त्वपूर्ण योगदान था। ऑस्ट्रिलियन लेखक लिखता कि

Leading an blown army to the further west Over the deserts where the sand is And blown far beyond unto the northern hills, He ever conquering held beneath his Sway. The Lords of Ispahan Kashmir, Iran, And Katristan, Who did him homage pay. बापा रावल ने तत्कालीन भारतीय राज्यों का संयुक्त मोर्चा का गठन किया जिनमें मुख्यत: उज्जैन के प्रथम नागभट्ट प्रतिहार, सांभर व अजमेर का शासक अजयराज, हाड़ौती का धवल व जैसलमेर का शासक देवराज भाटी के साथ तत्कालीन अन्य भारतीय शासकों का संयुक्त मोर्चा बापा के नेतृत्व में गठित हुआ। मेवाड़ की ख्यातों में इस संयुक्त सेना की संख्या अतिशयोक्तिपूर्ण मिलती है।

यह सत्य है कि बापा के पास तत्कालीन समय की आवश्यकतानुसार सुसज्जित विशाल सेना के साथ बापा का कुशल नेतृत्व संख्या के आँकड़ों का विश्लेषण करें तो 12 लाख 90 हजार के स्थान पर 90हजार सेना की संख्या हो सकती है। बापा के शासन व राज्य विस्तार में पश्चिम भारत को अरब आक्रमणों से लगातार युद्ध करना पड़ा। बापा ने अपनी सैन्य कुशलता से अरब खलीफ़ा शक्ति को भारत से ही नहीं मध्य एशिया तक खदेड़ कर भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों की स्थापना की। ऐसा माना जाता है कि अरब खलीफ़ाओं के सैनिकों ने हिन्दू कन्याओं से विवाह कर उन्हें अपने धर्म परिवर्तन कराये। बापा के सन्दर्भ में पाते हैं कि बापा ने ईरान, खुरासान की विजय कर वहाँ कई विवाह किये। यों हो सकता है कि जिन्हें अरबों ने धर्म परिवर्तन करा अपना लिया, उन्हें और अन्य अरब कन्याओं को पुन: हिन्दू धर्म में संस्कारित कर समाज में स्थान देने का सराहनीय कार्य किया। इस प्रकार बापा के प्रगतिशील कदम से समाज में समरसता पैदा हुई। बापा के बारे में अरब ग्रन्थों में भी वर्णन मिलता है। जिसमें 'फतुहुल बलदान' ग्रन्थ के लेखक ने लिखा कि बापा से अरब सेना को परास्त हो भागना पड़ा। उनके लिये भारत में रहना खतरे भरा होने से उन्होंने दरिया पार सुरक्षित स्थान पर नगरों को बसाया। बापा के प्रभाव से भारत में पुन: मूर्तिपूजा होने लगी। इस वर्णन से ज्ञात होता है कि अरबों ने भारतीय भू-भाग पर अधिकार कर वहाँ धर्म परिवर्तन कराया जिसे बापा ने अपनी विजय यात्रा से विजित कर पुन: हिन्दू धर्म में परिवर्तित करवाया अर्थात् अपने मूलधर्म में पुन: समाहित हुए।[50]

50. मेवाड़ गौरव स्मारिका 2011, युग पुरुष बापा रावल, पृ. 48-51; सं. डॉ. देव कोठारी व डॉ. शक्तिकुमार शर्मा, अमरकाव्यम्, तृतीय सर्ग, छन्द सं. 75-77, पृ. 103-104; सं. डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, राणा रासो, छन्द सं. 60, पृ. 177-178; सं. डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, राणा रासो, छन्द सं. 430, पृ. 137; सं. डॉ. देव कोठारी, भीम विलास, पृ. 5-6; सं. डॉ. मनोहरसिंह राणावत, चित्तौड़ उदयपुर का पाटनामा, भाग-1, पृ. 65-66; जेम्स टॉड कृत उदयपुर राज्य का इतिहास, बलदेवप्रसाद एवं मुंशी देवीप्रसाद कृत हिन्दी अनुवाद, पृ. 106-107 (उद्धृत, मेवाड़ गौरव स्मारिका 2011, पृ. 66); रामनाथ रत्नू, इतिहास राजस्थान, पृ. 25; Iran Austin-Mewar-The World's Longest Seving Dynasty, Page-29 (उद्धृत - मेवाड़ गौरव स्मारिका 2011 पृ. 66); कुं. देवीसिंह मंडावा; भारत और भारतीयता के रक्षक, पृ. 19-21, अल बिलाजुरी-फतुहुल बलदान, ई. एण्ड डी., भाग-1, पृ. 126 (उद्धृत मेवाड़ गौरव स्मारिका-2011, पृ. 66)

समसामयिक स्रोतों के अभाव में परवर्ती स्रोतों के सन्दर्भों में अतिशयोक्ति हो सकती है, लेकिन यह सत्य है कि बापा ने मेवाड़ राज्य की सीमा को ईरान, ईराक व खुरासान तक फैलाया। यह भी सही है कि हारीत राशि के उद्देश्यानुसार शिष्य बापा ने राज्य विस्तार ही नहीं किया वरन भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने का महनीय कार्य कर इतिहास में स्थान अमर कर दिया। बापा के संयुक्त मोर्चा में लड़े गये सैन्य अभियान और सैन्य संगठन तथा धर्म रक्षा के कार्यों ने बापा की पहचान ऐसी बनाई जैसे यूरोप में ईसाई धर्म को बचाने के लिए चार्ल्स सेसेवियर ने कार्य किये। यों भारतीय इतिहास में बापा रावल व नागभट्ट प्रथम का स्थान बना।

बापा का सिक्का

राजा व राज्य की पहचान का मुख्य आधार सिक्के होते हैं। जो उस समय की पहचान को स्थायी बनाते हैं। प्राचीनकाल की ऐतिहासिक सामग्री में सोने, चाँदी व ताम्बे के सिक्के प्राप्त होते हैं। मेवाड़ के शासकों में गुहिल के चाँदी के शीलादित्य के ताम्बे के और बापा रावल के सोने के सिक्कों की जानकारी मिलती है जो उन्हें स्वतन्त्र व प्रतापी शासक के रूप में स्थापित करते हैं।

गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने अपने शोध आलेख में बापा रावल के सोने के सिक्के को अजमेर के पास से प्राप्त होना बताया है और इसका वजन 65, 5/7 रती अर्थात् 115 ग्रेन वजन का बताया है। सिक्के के दोनों ओर चिह्नों का अध्ययन भी आवश्यक है।

सिक्के के सामने की ओर : उसके ऊपर के हिस्से से लेकर बाईं ओर लगभग आधे सिक्के के किनारे पर वर्तुलाकार लाईन है जिसे 'माला' मान सकते हैं। ऊपर के हिस्से में माला के नीचे बापा के समय की लिपि में 'श्रीवोप्प' लिखा हुआ है जो इसके बापा का होने की पहचान देता है। माला के पास खड़ा एक त्रिशूल है जो शिव का मुख्य आयुध है। त्रिशूल के दाईं ओर प्रस्तरवाली वेदी पर शिवलिंग बना है जो बापा के इष्टदेव एकलिंग का सूचक है। शिवलिंग के दाहिनी ओर शिव

का वाहन नन्दी (बैल) शिवलिंग की ओर मुँह करके बैठा और शिवलिंग और नन्दी के नीचे पेट के बल पर लेटा हुआ एक व्यक्ति हैं उसके जाँघों तक का भाग ही सिक्के पर आया है। जिसे बापा रावल के रूप में मानते हैं जो कि एकलिंग का परम भक्त था।

पीछे की ओर : सिक्के के दूसरी ओर पीछे की तरफ दाहिनी ओर के थोड़े से किनारे को छोड़कर सिक्के पर अनुमानत: तीन चौथाई भाग पर बिन्दियों की माला है। माला के नीचे एक लाईन में चिह्न है। उनमें एक सिमटा हुआ चंवर प्रतीत होता है। दूसरा चिह्नों सूर्य के सूचक चिह्नों जैसा है, जो बापा को सूर्यवंशी होना प्रमाणित करता है। तीसरा चिह्न छत्र का है वह थोड़ा घिसा है। उक्त तीनों चिह्नों के नीचे दाहिनी ओर को मुख किये गाय खड़ी है, वह बापा के गुरु हारीत राशि की कामधेनु के रूप में हो सकती है उसकी बापा ने सेवा की थी। गाय के पैरों के पास बाईं ओर मुख लिए गाय का दूध पीते बछड़ा है उसके गले में घंटी बँधी है। पूंछ ऊपर उठी हुई है तथा बछड़े का स्कंध दिखाई देता है। बछड़े की पूँछ के कुछ ऊपर गाय के मुख के लिये एक पात्र रखा है उसका कुछ अंश घिसा है तो भी नीचे रखी पैंदी स्पष्ट है। गाय और बछड़े के नीचे दो आड़ी लाईनें हैं जो नदी के दोनों तटों को सूचित करती है क्योंकि दाहिनी ओर अंत में वहाँ पर मछली निकली हुई बताई गई हैं जो वहाँ जल का होना बताती है। यह नदी एकलिंगजी के पास बहने वाली कुटिला नदी की सूचक होगी। उक्त लकीरों के दाँहिनी ओर तिरछी मछली बनी है, जिसका पिछला भाग लकीरों से जा मिला है।[51]

बापा के सिक्के को लेकर विद्वानों के विभिन्न मत हैं लेकिन सिक्के के दोनों ओर अंकन से प्रमाणित होता है कि यह सिक्का बापा रावल का ही है।

बापा के निर्माण कार्य

बापा रावल का मूल्यांकन केवल योद्धा के रूप में ही नहीं अपितु प्रजा हितैषी कार्यों के निर्माणकर्त्ता के रूप में भी आवश्यक है। बापा के निर्माण कार्यों पर शिलालेख एवं ताम्रपत्र तो ज्ञात नहीं है, लेकिन राजस्थानी काव्यों एवं ग्रन्थों में उपलब्ध विवरण के आधार पर निम्न हैं –

'अमरकाव्यम' में लिखा है कि अमृत कुण्ड के पास बापा ने अपने ईष्टदेव का

51 नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग-1, पृ. 241-285, (गौरीशंकर हीराचन्द ओझा का लेख 'बापा रावल का सोने का सिक्का'); गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग-1, पृ. 110-112

मन्दिर बनवाया, जहाँ पर बापा व हारीत की मूर्ति आज भी विद्यमान है एकलिंगजी के मध्य में स्थित मुख्य प्रासाद का भी निर्माण करवाया एकलिंग मंदिर में ही स्वर्ण निर्मित तुला स्थापित करवाई, जिसके दो तोरण स्तंभ आज भी स्थित हैं। घासा (त. मावली, जिला-उदयपुर) ग्राम के समीप स्थित मुच्छा नामक गाँव व 'बापासर' नामक तालाब बनवाया। बापा की माता एवं पत्नी ने नागदा नगर में शिव के दो मंदिर बनवाये।

'खुम्माण रासो' में निर्माण कार्यों के बारे में लिखा कि बापा ने अपने इष्टदेव एकलिंग का मन्दिर निर्माण कर प्रतिष्ठा का आयोजन करवाया। इस प्रतिष्ठा कार्य में 70 करोड़ रुपये व्यय हुए। उसने जैन और शिव मन्दिरों का निर्माण करवाया जहाँ नवबीसी (9 X 20) = 180 मंदिरों की झालरें बजती थी।

प्रतिष्ठा के अवसर पर बापा ने ब्राह्मणों, चारणों, भाटों को खूब दान दिया। अपनी माता कमलावती व अन्य 27 रानियों ने तुलादान में सोना, चाँदी आदि का दान किया। बापा ने कुएँ, तालाब व बावड़ियों का निर्माण करवाया। उसने नागदा नगर बसा नागिल ब्राह्मण को दिया। अपने गुरु के नाम से आश्रम व मठ की स्थापना की और इनकी सेवा के लिये कई ग्राम, नगर, हाथी, घोड़ों के साथ धनराशि भेंट की। बापा ने एकलिंग के मंदिर की स्थापना उसी स्थान पर की जहाँ बापा सबसे पहले हारीत राशि से मिला और हारीत राशि का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। इस स्थान एवं मंदिर में तब से आज तक मेवाड़ राजवंश की आस्था बनी हुई है। सिसोद वंशावली में लिखा कि चित्तौड़ के पास वीरवरणी महादेव व आंवल्या पहाड़ पर गुफा के पास गुहाराक्षक को मार उससे 32 मण की तलवार ली और उसी स्थान पर चतुर्भुज जी का मन्दिर विष्णु कुण्ड व एक शिव कुण्ड का निर्माण कराया। उसकी प्रतिष्ठा आदि पुन: करवाई। श्री एकलिंगजी के मन्दिर हेतु 12 गाम भेंट किये।[52]

बापा का संन्यास व स्वर्गवास

बापा के संन्यास व मृत्यु के बारे में कई मत प्रचलित है। 'श्रीमद् एकलिंङ्गपुराणम्' में इस सन्दर्भ में लिखा कि बापा ने वि.सं. 810 (753 ई.) में

52. सं. डॉ. देवकोठारी व डॉ. शक्तिकुमार शर्मा, अमरकाव्यम्, तृतीय सर्ग, श्लोक सं. 51, 71, 72, 73, 74, पृ. 96, 101, 103; सं. डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, खुम्माण रासो, भाग-2, छन्द सं. 469-477, पृ. 144-146; Iran Austin-Mewar-The World's Longest Serving Dynasty, Page-29 सं. डॉ. हुकुमसिंह भाटी, सिसोद वंशावली, पृ. 25-27

अपने पुत्र को राज्य सौंप नागदा आया। यहाँ अथर्व विद्या विशारद अपने गुरु के दर्शन कर चतुर्थाश्रम (संन्यास) की आकांक्षा प्रकट की ओर गुरु की स्वीकृति से संन्यास ग्रहण किया तब बापा का नाम नित्यानन्दाश्रम के रूप में जाना जाने लगा। 'खुम्माण रासो' में वर्णन है कि बापा के वृद्ध होने पर संन्यास ग्रहण करने की घटना है और संन्यास नागदा में न लेकर काशी (वाराणसी) में लेता है और गंगा किनारे रहने लगता है ऐसा विवरण मिलता है।

श्यामलदास, गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, कुं. देवीसिंह मंडावा भी बापा द्वारा संन्यास लेने को स्वीकार करते हैं। 'मेवाड़ रावल राणा जी री बात' में बापा द्वारा संन्यास लेने का विवरण नहीं है, परन्तु उसमें पुत्र खुम्माण को राज्य सौंप भैरव महाकाल की आज्ञा से जीवित समाधि लेने का विवरण है। 'चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा' में लिखा कि गजनी में रहते बापा ने वि.सं. 431 में देह छोड़ी। बापा नवगजा पीर के रूप में पूजा जाने लगा। कर्नल जेम्स टॉड ने भी लिखा कि उसने तपस्वी लोगों के समान मेरु पर्वत की तलहटी में जीवित समाधि ली। आगे लिखा कि भट्ट ग्रन्थों में एक विचित्र वृतान्त यह आता है कि बापा के देहान्त होने के पश्चात् अन्तिम संस्कार को लेकर विवाद हो गया। मुसलमान बापा के शव को दफनाना चाहते, परन्तु हिन्दू शव की दाह-क्रिया करना चाहते। विवाद बढ़ा कुछ समय बाद शव के ऊपर के कपड़े को उठाकर देखा तो शव के स्थान पर फूल उगे मिले। उन फूलों को वहाँ से हटाकर मानसरोवर में डाल दिया गया। लगता है यह वृतान्त कल्पित होगा। चारण रामनाथ रत्नू ने अपने ग्रन्थ में लिखा कि बापा 100 वर्ष की उम्र में वि.सं. 971 के लगभग खुरासान में परलोक गया। यह विवरण भी विश्वसनीय नहीं है।

यों बापा की मृत्यु उपर्युक्त विवरणों के अनुसार गज़नी, मेरुपर्वत की तलहटी खुरासान, काशी सभी कल्पित जानकारी है। बापा की मृत्यु नागदा में हुई और उसका समाधि मंदिर एकलिंग मन्दिर से लगभग तीन किलोमीटर दूर उत्तर में 'बापा रावल' नाम से पानी के स्थाई स्रोत के साथ वर्तमान में सुरक्षित है जहाँ शिवलिंग के पीछे हारीत राशि की मूर्ति में से जलधारा प्रवाहित हो शिवलिंग पर गिरती रहती है उन्हीं के बायें उत्तर की तरफ मुँह किये बापा रावल की मूर्ति बापा हारीत की जनता में आस्था बनाये हुए है।

बापा ने संन्यास ग्रहण किया तब उम्र क्या थी? और कितने वर्ष संन्यासी करने पर समाधि अथवा मृत्यु कब हुई? इनके सन्दर्भ में उपलब्ध स्रोतों में व्यवस्थित प्रमाण नहीं हैं, लेकिन प्राप्त जानकारी का विश्लेषण कर तथ्यों को ज्ञात किया जाने का प्रयास में पाते हैं कि 'श्रीमद्एकलिंगपुराणम्' में बापा ने वि.सं. 810 (753 ई.) में संन्यास ग्रहण करना बताया है। महाराणा कुम्भाकालीन 'एकलिंङ्गमाहात्म्य' के राजवर्णन अध्याय में लिखा कि पुराने कवियों ने कहा है कि संवत् 810 में श्रीएकलिङ्गशंकर से वर प्राप्त बापा प्रसिद्ध राजा हुआ।

इस श्लोक में यह ज्ञात होता है कि वि.सं. 810 (753 ई.) में बापा हुआ। परन्तु इससे स्पष्ट नहीं होता कि इस संवत् में बापा का जन्म या चित्तौड़ विजय अथवा राज्याभिषेक या राज्य त्याग कर संन्यास लेना या उसकी मृत्यु हुई। इससे यह तो स्पष्ट हो जाता है कि वि.सं. 810 में बापा जीवित था।

कुम्भा के बाद रायमल के समय के 'एकलिंङ्गमाहात्म्य' जिसको 'श्रीमद् एकलिंङ्गपुराण' नाम से भी जाना जाता है। इसमें उल्लेख है कि है मुने! संवत् 810 (753 ई.) में अपने पुत्र को राज्य का उत्तराधिकार देकर (बापा) पृथ्वी पर विख्यात नागह्रद (नागदा) क्षेत्र में पहुँचा। वहाँ उन्होंने अर्थ विद्या विशारद् अपने विख्यात गुरु (हारीत राशि परम्परा) के दर्शनों का लाभ लिया। वह हाथ में समिधा लेकर चौथे आश्रम अर्थात् संन्यासाश्रम की इच्छा लिए हुए था।

यों महाराणा कुम्भाकालीन 'एकलिंङ्गमाहात्म्यम्' तथा महाराणा रायमल कालीन 'श्रीमद्एकलिंङ्गमहात्म्यम् (पुराण) में वि.सं. 810 का उल्लेख है, लेकिन रायमल कालीन श्रीमद्एकलिंगमाहात्म्यम् (पुराण में) में संवत् के साथ-साथ यह स्पष्ट उल्लेख है कि बापा ने वि.सं. 810 में अपने पुत्र को राज्य सौंपकर संन्यासाश्रम के लिए गुरु के पास गया।

बीकानेर की अनूप संस्कृत पुस्तकालय (बीकानेर राज्य का पुस्तकालय) में हस्तलिखित ग्रन्थ में 'नैणसी की ख्यात' से उद्धृत है इसमें एक काव्य में बापा से प्रताप तक की वंशावली के श्लोक की द्वितीय पंक्ति में शक सं. 685 में बापा हुआ लिखा है। इस शक संवत के अनुसार बापा 820 (763 ई.) में होना आता है। जो अन्य स्रोतों से मेल नहीं खाता है अतः इसको विश्वास योग्य नहीं माना जा सकता। महाराणा कुम्भा व महाराणा रायमलकालीन लेखन कार्य पुराने तथ्यों और कवियों की जानकारी पर आधारित होने का भी उनमें विवरण है अतः 'एकलिंङ्गमाहात्म्यम'

में वि.सं. 810 (753 ई.) की पुष्टि होती है। जिसके आधार पर बापा द्वारा संन्यास ग्रहण करने का संवत् 810 (753 ई.) माना जा सकता है।[53]

यों विभिन्न तथ्यों का विश्लेषण के बाद ज्ञात होता है कि बापा का जन्म वि.सं. 769 (712-13 ई.), चित्तौड़ राज्य प्राप्ति 22 वर्ष की आयु में वि.सं. 791 (734 ई.), बापा का राज्य काज से संन्यास ग्रहण 19 वर्ष राज्य करने के बाद 41 वर्ष की आयु में वि.सं. 810 (753 ई.) निश्चित होती है। परन्तु बापा का राज्य काल 19 वर्ष व आयु 41 वर्ष में सन्दर्भित विजयों का कार्य कैसे सम्भव हुआ। अत: इस पर और अनुसन्धान की आवश्यकता है। वर्तमान में तथ्यों के आधार पर बापा का कार्यकाल उपर्युक्त मानने योग्य है।

बापा का संन्यासी जीवन कितना और अन्त में स्वर्गवास कब हुआ इस पर उपलब्ध स्रोतों में प्रमाणिक जानकारी नहीं है। 'चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा' में बापा का देहान्त वि.सं. 431 दिया है। परन्तु इसका अन्य स्रोतों से सामजंस्य नहीं हो पाता है। 'मेवाड़ रावल राणा जी री वात' व 'सिसोद वंशावली' में भी बापा के देहान्त का विवरण नहीं है। चारण रामनाथ रत्नू ने सौ वर्ष की आयु के वि.सं. 971 में खुरासान में बापा का परलोक गमन बताया है। लेकिन इसकी पुष्टि भी अन्य स्रोत से नहीं होती है। यों ऊपर वर्णित तिथियों में बापा का जन्म वि.सं. 769 माने और रामनाथ के अनुसार मृत्यु वि.सं. 971 माने तो बापा का देहान्त 202 वर्ष की आयु में आता है। जो विश्वास योग्य नहीं है।

बापा एक सामान्य व्यक्ति से विशाल साम्राज्य का मालिक बना। उसके प्रेरणा

53. सं. डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू प्रो. भँवर शर्मा, श्रीमद् एकलिंगपुराणम् , एकोनविशोऽध्याय, श्लोक सं. 21, 22, 23, 27, 50, पृ. 270-271, 272, 275; सं. डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, खुम्माण रासो, भाग-2, छन्द सं. 505, 506, पृ. 151; श्यामलदास, वीर विनोद, भाग-1, पृ. 252; गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग-1, पृ. 107-110 कुं. देवीसिंह मंडावा, भारत और भारतीयता के रक्षक, पृ. 23; सं. डॉ. हुकुमसिंह भाटी, मेवाड़ रावल राणा जी री बात, पृ. 4; सं. डॉ. मनोहरसिंह राणावत-चित्तौड़ उदयपुर पाटनामा, भाग-1, पृ. 66, चारण रामनाथ रत्नु, इतिहास राजस्थान, पृ. 25; सं. डॉ. प्रेमलता शर्मा, 'एकलिंगमाहात्म्यम्' परिशिष्ट से उद्धृत, पृ. 171, रघुवंश, 1-59, 8-4; कौटिल्य अर्थशास्त्र पृ. 15; मुण्ड कोपनिशद (1-2-12); डॉ. एल. पी. टैसीटोरी, सं. डिस्क्रिप्टिव केटलॉग ऑफ वार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मैन्यूस्क्रिप्ट, वोल्यूम-2, पृ. 263, 266, उद्धृत मेवाड़ गौरव स्मारिका-2011, युग पुरुष बापा रावल, पृ. 53-57'

व मार्गदर्शक हारीत राशि थे। हारीत ने बापा बालक को मानवीय मूल्यों व शारीरिक क्षमताओं के परिपूर्ण ही नहीं बनाया उसे अपने परम लक्ष्य 'मोक्ष' के मार्ग का भी पाठ पढ़ाया। इसीलिये हारीत द्वारा निर्दिष्ट लक्ष्य के रूप में अरव आक्रमणों से भारत व भारतीयता की रक्षा की सुव्यवस्था के बाद बापा पुन: अपने गुरु के पास आत्म कल्याण के मार्ग पर उतरा। बापा ने राज्य स्थापना भौतिक सुखों को भोगने हेतु न की बल्कि संसार में शान्ति व सुव्यवस्था की स्थापना में नश्वर शरीर को लगाने के उद्देश्य से निर्लिप्त हो कार्य किया। इसी का परिणाम हुआ कि तत्कालीन भारतीय शासकों ने बापा का नेतृत्व स्वीकारा। बापा ने भी वो ही किया जो तत्कालीन आवश्यकता और मानव जाति के लिये आवश्यक था।

कतिपय स्रोतों में बापा के वृद्ध होने पर संन्यास लेने और 100 वर्ष की आयु में स्वर्गवास होना बताते हैं। बापा के संन्यासी जीवन के बारे में तथ्यात्मक जानकारी का अभाव है, लेकिन नागदा, एकलिंग व बापा रावल समाधि स्थल का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि बापा एकलिंग का सेवक हारीत का शिष्य और ईश भक्त।

नागदा एक नगर था। एकलिंग एक शान्त व स्थायी पानी का स्रोत और इसी के पास गुरु का आश्रम, 'हारीत आश्रम' ओर इससे भी शांत एकान्त स्थायी पानी के स्रोत के साथ 'बापा रावल' समाधि स्थल। इन स्थानों व बापा के लक्ष्य को मध्यनजर रखते स्थान के रूप में प्रथम तो 'एकलिंगजी' लिंग स्थान अथवा मन्दिर क्योंकि इन्हीं कीं कृपा व आराधना से ही बापा के व्यक्तित्व में अच्छाइयों का प्रवेश हुआ और इसी के साथ अपने गुरु हारीत का आश्रम जो एकलिंग मन्दिर परिसर का ही भाग था। निश्चित ही बापा का संन्यासी जीवन इसी प्रांगण में बीता होगा।

यह भी सम्भावना बनती है कि बापा एकान्त में ज्यादा रहा होगा। इसीलिये उसने एकलिंग जी से भी तीन किलोमीटर उत्तर में स्थायी पानी के स्रोत के स्थान के रूप में अपना उपासना केन्द्र रखा हो। इसी कारण बापा का वहीं दाह संस्कारकर समाधि को मन्दिर के रूप में स्थापित किया जो वर्तमान में भी उनकी पहचान कायम किये है।

इन स्थलों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि एकलिंग मन्दिर के अलावा यहाँ कोई बड़ा स्थाई स्मारक नहीं है जो बापा के संन्यासी जीवन की भव्यता प्रकट कर

सके। यह कहा जा सकता है कि बापा ने अपना संन्यासी जीवन अत्यन्त सादगीपूर्ण और परम लक्ष्य की प्राप्ति में एकान्त में ही बिताया। जो सदियों से राज सुख के स्थान पर आत्म कल्याण का पाठ पढ़ाता आ रहा है। मुझे खुशी इस बात की है कि आज भी बापा का समाधि स्थल व हारीत आश्रम सामान्यत: मूल रूप में ही हैं।

बापा का व्यक्तित्व

बापा के सन्दर्भ के ऐतिहासिक विवरणों से ज्ञात होता है कि बापा सामान्य से कुछ भिन्न व्यक्तित्व वाला व्यक्ति था। बापा ने अपने कार्यों से मेवाड़ की विशिष्ट पहचान कायम की। भारतीय स्तर पर स्थान प्राप्त करके तत्कालीन अरबों के विनाशकारी एवं धर्म परिवर्तन के प्रयासों से भारत को बचाया, भारतीय संस्कृति की सुरक्षा से भारत को मुस्लिम राष्ट्र बनने से रोका। ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व भी अनोखा ही है।

ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर बापा का शरीर विशाल था। उसका कद 9 हाथ (अर्थात् 13.5 फीट) का था। उसकी भुजाएँ विशाल पैरों के घुटनों तक पहुँचने वाली थी। भगवान एकलिंग की कृपा से उसका शरीर वज्र जैसा था। उसके शरीर की कान्ति चन्द्रमा के समान प्रभावित करती। विशाल शरीर पर प्रभावशाली लम्बी मूछें उसका रोबिला स्वभाव व्यक्त करती थी। बापा शरीर के हृदय प्रदेश पर सोलह हाथ (24 फीट लम्बा उत्तरीय धारण करता था) उसके कटि प्रदेश में पैंतीस हाथ 52.5 फीट लम्बी धोती धारण करता था। बापा अपनी कमर में 40 प्रस्त (एक मण) की तलवार बाँध रखता था। वह अपनी सुरक्षा हेतु दो मण का(47.200 किग्रा)लोह कवच पहने रहता था। बापा बावन पल का सोने का लंगर पैरो में धारण किये रहता था।

बापा के शारीरिक गठन, वल की तुलना महाभारत काल के पात्र 'भीम' से की है। बापा को गीतों में बड़ा आहारी बताया है कहा कि वह सुबह एवं सायंकाल चार बकरों के मांस का आहार करता था। भोजन के बाद पेट पर हाथ फेर मेघ गर्जना के समान डकार लेता था। शारीरिक वल के रूप में बापा को दुर्गा पूजा के समय दो भैसों को एक तलवार के वार में एक साथ काटता अथवा तीरों से मारता था।

शारीरिक वल व बहादुरी में तत्कालीन समय में बापा की बराबरी का कोई

नहीं था। लड़ाई में उसके तलवार के जबरदस्त वार को शत्रु सहन न कर सकते थे। युद्ध में काल की तरह शत्रु को मार मूंछों पर ताव देकर शेर की तरह गर्जना से शत्रुओं को भयांकित कर देता था। ऐसे शारीरिक क्षमता के धनी बापा बल ही नहीं, राजनीति व कूटनीति में भी निपुण था। इसी कारण कि बापा ने चित्तौड़ विजय से अपनी रणनीति को सफल करते एक के बाद एक विजय ही नहीं कूटनीति सन्धियों से भारतीय शासकों का प्रभावशाली नेतृत्व का स्वामी बना। बापा द्वारा निर्मित भारतीय संयुक्त मोर्चे ने बापा को कुछ ही समय में भारतीय सीमा पर खलिफाओं के आक्रमणों को विफल कर भारतीय सांस्कृतिक विरासत को बचाया।

भारतीय परिकल्पनानुसार बापा को चक्रवर्ती सम्राट के रूप में स्थापित करने के प्रमाण मिलते हैं। बापा के सफल अभियान को स्थायित्व देने जनमानस ने उसे शिव भक्त के साथ 'शिव गण' का स्थान भी दिया है। बापा की बहुआयामी प्रतिभा को प्रकट करने मेवाड़ की ओर बापा की विरुदावली में उसे राजाओं का गुरु, त्याग व दान में गुरु, शक्ति में भी गुरु, बापा के बलवान होने से उसे वंदनीय गुरु और राजाधिराज समूह के महान गुरु के रूप में स्थापित करने के काव्य हैं।

बापा द्वारा किये निर्माण कार्यों के व विशाल साम्राज्य की व्यवस्था में उसने उच्च कोटि की वित्त व्यवस्था का प्रबन्ध किया। बापा धर्मनिष्ठ व्यक्तित्व का धनी था। अत: न्यायपूर्ण धन का उपार्जन ही राज्य की आय का मुख्य स्रोत होगा। बापा ने स्त्रियों को सम्मान व धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की मुसलमान स्त्रियों की सन्तान को उन्हीं के धर्म में व नाम से पहचान दी साथ ही उनके स्वतन्त्र राज्य के रूप में भी अधिकार प्रदान किये।

बापा शिव भक्त के रूप में अपनी अमिट छाप मेवाड़ राजवंश पर छोड़ गया। बापा ने मेवाड़ राज्य का स्वामी 'एकलिंग' को मानकर एकलिंग जी के 'दीवाण' (मंत्री) के रूप में अपने को स्थापित किया। यह बात राज्य में मानवीय धर्म की पालना का विश्व में अनूठा उदाहरण है। इस बात में राज धर्म की सभी शिक्षाएँ समाहित है। बापा उच्च कोटि का विचारक और संत था। उसने संसार के शाश्वत नियमों को समझ शासक रहते संत के रूप में आत्मकल्याण का सफल मार्ग कैसे प्राप्त किया जा सकता है उसे अपना अपने से आगे के शासकों को प्रेरित किया। इसी का परिणाम है कि बापा के बाद के मेवाड़ राजवंश के सभी शासकों का मूल पद

'एकलिंग जी के दीवाण' का वर्तमान तक चला आ रहा है। आज भी मेवाड़ के शासक जिस प्रकार बापा रावल सोने की छड़ी से साथ 'एकलिंगजी' मन्दिर में सेवामें उपस्थित रहता ठीक उसी तरह की परम्परा वर्तमान में भी देखने को मिलती है।

इस परम्परा के पीछे बापा की सोच उच्च स्तर की थी। राज शक्ति के मद में व्यक्ति अपने वास्तविक कर्त्तव्य और मार्ग से भटक जाता है। राज्य, राजा व जनता एक ही प्रकृति का स्वरूप है उसे कर्त्ता के रूप में नहीं भोग, द्रष्टा के रूप में निर्वहन करना चाहिये। जो मानवीय विकृतियों को नियन्त्रण करने में अहम है। इसलिये बापा की मान्यता थी कि जिस प्रकार संसार का कोई अप्रत्यक्ष संचालक है सभी व्यवस्थाएँ व्यक्ति के किये बिना संचालित है ठीक उसी प्रकार राज्य का मालिक भी वही अप्रत्यक्ष शक्ति ही है। मनुष्य तो उस कार्य के निमित्त अपना कर्म कर उसी में समा जाता है। ऐसी व्यवस्था को शासक अपने जीवन में मान राज्य के सभी कार्य करे तो समाज में शान्ति व्यवस्था सहज रूप से बन पड़ेगी। बापा की यह दिशा किसी सम्प्रदाय की नहीं होकर एक राजधर्म की उच्चतम व्यवस्था थी। जो वर्तमान में राजधर्म के समवाहकों के सीखने योग्य कार्य है।

बापा अपने मन विचारों को शुद्ध रखने के दैनिक कार्यक्रमों को सम्पादित करता था। दान, पुण्य, व्रत, उपवास से तन व मन को शुद्ध करने की सनातन विधि का पालन कर्त्ता था। जिससे जीवन का परम लक्ष्य प्राप्त हो सके। बापा ने गुरु द्वारा निर्देशित लक्ष्य की पूर्ति के बाद सांसारिक सुखों का उपभोग न कर अपने उत्तराधिकारी को राज्य संचालन का भार सौंप एकान्त में परम लक्ष्य को पहुँचा।

बापा द्वारा राज्य का स्वामी दैविक मानने से राज्य व जनता में दो रूप न रह एक हो गये। 'दीवाण' मंत्री पद पर तो जनता दैयिय सम्पत्ति का स्वामी रूप में शिव सम्पत्ति को मान राज्य की रक्षा, जनता में सद्विचार नैतिक आदर्शों का बनाये रखना जैसे उच्च विचारों से प्रेरित बने रहे। इसी का परिणाम हुआ कि शासकों में भी योग्यता बनाई रखने की परम्परा बनी, जब भी उसके विपरीत मेवाड़ के अयोग्य शासक उत्तराधिकारी बने तो इतिहास साक्षी है जनता व सामन्तों ने उसे हटाया। दूसरी तरफ मेवाड़ राज्य की रक्षा के लिए जनता का महनीय योगदान रहा। राज्य पर विपत्ति के समय यहाँ की जनता ने त्याग के उच्चतम उदाहरण प्रस्तुत किये जिनमें 'पन्ना का अपने पुत्र का बलिदान दे स्वामी उदयसिंह को बचाना विश्व इतिहास में अनूठा उदाहरण है। बापा का शासक बनने में भी उसके प्रति जन आस्था ही मुख्य बात थी। जो कि हारीत के रूप में व साथी भीलों के सहयोग के रूप में भी देखने को मिलती है। तभी से ही मेवाड़ में राज्य की रक्षा के रूप में आम जनता का सैनिक व सेना की आवश्यक मदद की परम्परा चलती रही।

बापा ने ईश्वर व जनता के मध्य शासक के रूप में नहीं सेवक के रूप में शासक की अवधारणा का निर्माण कर मेवाड़ी शासकीय व्यवस्था की नींव डाली जिसने जनता में यह भाव पैदा किया कि हमारा शासक तो पराशक्ति के रूप में शिव है राज्य का दीवाण अर्थात् मंत्री तो बदलते ही रहते हैं। जिस प्रकार दीवान का कर्त्तव्य है ठीक उसी प्रकार जनता का भी राज्य रक्षा में सहयोग अपेक्षित है। वे स्वयं किसी व्यक्ति व राजवंश की सेवा अथवा सहयोग न कर शिव राज्य की रक्षार्थ अपना कर्त्तव्य निभा रहे है। अत: उस अदृश्य शक्ति को धोखा नहीं दिया जा सकता है।

बापा को राष्ट्र रक्षा के लिए और सुव्यवस्था के लिए भी इतिहास में याद किया जाता रहेगा। बापा के युद्ध अभियान अपने पैतृक राज्य के अलावा राज्य विस्तार के लिए न होकर सुव्यवस्था व शान्ति स्थापना के प्रयास थे। अत: बापा ने विजित क्षेत्रों को पराजित शासकों की व्यवस्था में आवश्यक सुधार कर अपने अधीन बनाया और उनके सहयोग से शान्ति व सुव्यवस्था स्थापित की। इसी का परिणाम था कि खलीफाओं की इस्लामी आँधी के रूप में प्राचीन संस्कृतियों को नष्ट कर इस्लामिक विस्तार की योजना को बापा ने ऐसा जोरदार रोका की इस्लाम को भारत में प्रवेश करने में कोई 500 वर्ष लग गये। साथ ही प्राचीन भारतीय संस्कृति को वर्तमान तक जीवित रखने की परम्परा जो बापा ने डाली उसी को आगे भी पथ प्रदर्शकों ने बनाये रखा।

◊◊